

घोष

शिक्षण विधि



घोष शिक्षण विधि



प्रकाशन:

प्रकाशन क्रमांक - 47

साहित्य संगम

74, रंगराव मार्ग, शंकरपुरम्

बेंगळूरु - 560 004

©

प्रथम संस्करण : सन् 2000 ई.

द्वितीय संस्करण : सन् 2008 ई.

मूल्य: रू. 25.00

केवल व्यक्तिगत उपयोग के लिये

मुद्रक :

राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय
गविपुरं मार्ग, केंपेगौडनगर

बेंगळूरु- 560 019

प्रस्तावना

कोषगत खड्ग, ग्रंथगत ज्ञान, तथा भूमिगत धन का कुछ उपयोग नहीं होता । इन तीनों को हस्तगत कर उपयोग करने की कला जानने वालों को ही इनका लाभ होता है। पीढ़ी दर पीढ़ी ऐसी कलाएँ चलती रहती हैं तथा अनुभव के आधार पर उनमें जोड़-घट भी चलते रहते हैं। इस अनुभव से ही वे एक शास्त्र में परिणित होती हैं।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा हिन्दू संघटन के कार्य में एक कार्यक्रम के नाते घोष विभाग द्वारा रणसंगीत का वादन प्रारंभ किया गया । तीन पीढ़ियों के इस कला के उपयोग द्वारा अब उसका लगभग एक शास्त्र सा बन गया है। स्वाभाविक ही उसको सिखाने की अनेक पद्धतियों का उदय इस अनुभव में से हुआ है ।

अनेक स्थानों पर प्रचलित उसमें से एक पद्धति का वर्णन-विवरण इस 'घोष शिक्षण विधि' पुस्तक में दिया है। अनेक वर्षों से सरल पाठों की सोपान-पद्धति का उपयोग करते हुए इस पद्धति द्वारा हजारों की संख्या में विभिन्न वाद्यों के वादक तैयार किये जा चुके हैं। अनुभवी आचार्यों द्वारा निर्मित तथा वर्णित यह शिक्षापद्धति घोषवादन सीखने व सिखाने वालों के लिये उपयोगी रहेगी ऐसा विश्वास है ।

मोहन भागवत

सरकार्यवाह, रा. स्व. संघ

मनोगत

हिंदू साम्राज्य दिवस (14 जून 2000 ई.) के पावन अवसर पर घोष शिक्षण विधि पुस्तिका का प्रथम संस्करण लोकार्पित हुआ था। अब इसका द्वितीय संस्करण मकर संक्रांति (14 जनवरी, सन् 2008 ई.) को प्रस्तुत करते हुए अतीव हर्ष का अनुभव हो रहा है।

प्रथम संस्करण के संदर्भ में अनेक बन्धुओं के लिपि एवं वर्तनी सम्बन्धी सुझाव प्राप्त हुए थे। उन सबका यथोचित समावेश करने का प्रयत्न इस संस्करण में किया गया है।

नये वादक स्वयंसेवकों को आनक, वंशी तथा शंख वादन सिखाने का एक क्रम यहां दिया है। नई बातें सिखाते समय अनेक विध प्रयोग करने पड़ते हैं। उससे प्राप्त अनुभवों में से ही कुछ आपके सम्मुख रखे गए हैं।

इसी प्रयोगशीलता के आधार पर नए-नए तरीके अपना कर हम सिखा सकते हैं। नाना विध अभिरूची, गुणवत्ता एवं ग्रहणशक्ति वाले स्वयंसेवक वादनेच्छु बन कर अपने पास आते हैं। इन सभी को केवल एक ही विधा या प्रयोग द्वारा सिखाना संभव नहीं होता। उचित भी नहीं होगा। इसीलिए अनेकों बातें दृढ़ कर, खोज कर बतानी पड़ती हैं।

यहां उपरोक्त प्रत्येक वाध कुछ आरंभिक रचनाएं उदाहरण के तौर पर कई छोटे छोटे हिस्सों में बांट कर समझाने का प्रयास किया है। इसी प्रक्रिया का अवलंब कर हम शेष रचनाएं भी सिखा सकेंगे। बल्कि कुछ रचनाएं आने के बाद, भाग बना कर सिखाने की अवश्यकता नहीं रहेगी। तथापि और अधिक अभ्यास - पाठों का अभ्यास कराने के पश्चात ही रचनाएं सिखाने से अच्छा वादन करने की क्षमता प्राप्त होने में सुविधा होगी।

रा. स्व. संघ के सरकार्यवाह माननीय श्री मोहनजी भागवत ने इस संस्करण के लिए उद्बोधक प्रस्तावना प्रदान कर हमारा उत्साह द्विगुणित किया है।

इस पुस्तक के प्रस्तुतिकरण में नागपूर, पुणे, बेंगलूर के अनेक ज्येष्ठ अनुभवी बंधुओं ने अपना अमूल्य योगदान दिया है। हम उन सब के ऋणी हैं। बेळगावि के श्री अशोक भंडारि जि ने इस कृति का हस्तप्रति को श्रमपूर्वक सिद्ध किया है। हस्तप्रति को संगणकीय मुद्रण प्रति बनाने में गायत्रि प्रिंटर्स, बेंगलूर इनका सहयोग मिला है। इस किताब का आकर्षक, रक्षाकवच का निर्मापक है मंगळूर के 'प्रिंट मीडिया'। हम उन सब के आभारी हैं। अत्युत्तम एवं समयबद्ध मुद्रण के लिए हम राष्ट्रोत्थान मुद्रणालय, बेंगलूर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करते हैं।

आशा है कि, इस पुस्तक घोष शिक्षक और शिक्षार्थियोंको उपयुक्त सिद्ध होगा। आपके सुझावों का सदैव हृदय से स्वागत है। धन्यवाद।

बेंगलूर

प्रथम संस्करण : सन् 2000 ई.

द्वितीय संस्करण : सन् 2008 ई.

प्रकाशक

अंतरंगा

❖ आनक शिक्षण विधि	1
❖ प्रयोग पाठ अभ्यास	4
❖ प्राथमिक पाठ अभ्यास	6
❖ रचना किरण - अभ्यासक्रम	10
❖ आनक पाठ - केरवा ताल	14
❖ रचना भूम - अभ्यासक्रम	16
❖ रचना उदय - अभ्यासक्रम	19
❖ आनक पाठ - खेमटा ताल	20
❖ रचना श्रीराम - अभ्यासक्रम	25
❖ आनक प्रगत पाठ	31
❖ वंशी शिक्षण विधि	34
❖ प्राथमिक पाठ अभ्यास	40
❖ रचना भूम - अभ्यासक्रम	45
❖ ध्वजसंगम - अभ्यासक्रम	49

❖ रचना केदार - अभ्यासक्रम	53
❖ वंशी प्रगत पाठ	57
❖ शंख शिक्षण विधि	62
❖ शंख प्राथमिक पाठ	65
❖ रचना किरण - अभ्यासक्रम	73
❖ रचना उदय - अभ्यासक्रम	76
❖ रचना श्रीराम - अभ्यासक्रम	79
❖ ध्वजप्रणाम - अभ्यासक्रम	84
❖ शंख प्रगत पाठ	86
❖ वादन शुद्धता (आनक, वंशी, शंख)	88
❖ घोषदंड	94
❖ नये वादकों का चयनक्रम	95
❖ नये वादकों के अभ्यासक्रम	96

आनक शिक्षण विधि

प्रति दिन 45 मिनट के अनुसार 20 दिन सतत् अभ्यास करने पर प्रायः एक रचना का विशुद्ध रूप से वादन करने की क्षमता आ सकेगी। 20 दिन एक साथ अभ्यास करना असंभव हो, तो पहले न्यूनतम 6-7 दिन अभ्यास करते हुए शिक्षार्थियों को उसी का स्वाध्याय एक सप्ताह तक करने की सुविधा उपलब्ध कराना। पश्चात् 6-7 दिन अगला अभ्यास तथा एक सप्ताह का शिक्षार्थियों द्वारा स्वाध्याय, पुनः इसी क्रम का अनुसरण करते हुए तीन चरणों में पूरा अभ्यास कर सकते हैं।

तंकार-अनुतंकार पर सही नियंत्रण पाने के लिए 5-6 दिन, प्रयोग पाठों के लिए 2-3 दिन और प्राथमिक पाठों के लिए 7-8 दिन इस प्रकार कुल 16 दिनों के कालांशों का पाठ्यक्रम यहाँ प्रस्तुत किया है। उसके बाद रचना का अभ्यास करना।

शिक्षार्थी की गुणवत्ता, ग्रहण-शक्ति तथा वादन में प्रगति देख कर पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करते हुए, उसी प्रकार नए नए प्रयोगों का अवलंब कर, 10-12 दिन प्राथमिक पाठों का अभ्यास होने पर रचना अभ्यास कर सकते हैं।

आरंभ में आनक के बजाय मेजपटल या सपाट जमीन पर दरी की 2-4 परतें बिछा कर केवल शारिकाओं से अभ्यास करना उचित रहेगा। तंकार-अनुतंकारों का भली भांति अभ्यास होने पर, प्राथमिक पाठों तथा रचनाओं का आनक पर अभ्यास करें।

मृदंग, तबला, ढोलक आदि ताल-वाद्यों का वादन अथवा ताल-ज्ञान के जानकार आनक सुलभता से सीख सकते हैं

कालांश-1 * 15 मिनट - प्राथमिक जानकारी

अ) वाद्य का सामान्य परिचय।

आ) आनक कसने तथा ढीला करने की विधा।

इ) वाद्य धारण करने की पद्धति।

ई) उत्तम ध्वनि प्राप्ति के लिए ताँतों का समायोजन।

उ) दाएं-बाएं हाथों में शारिका पकड़ने की पद्धति।

ऊ) वाद्य का रख रखाव इत्यादि।

* 2-3 मिनट - बिना आघात के दाएं-बाएं शारिकाओं के चलन का अभ्यास।

* 15 मिनट - तंकार अभ्यास। दाहिने हाथ से 20-25 सेकंड निरंतर अभ्यास। अल्पविराम के बाद 3-4 मिनट यही अभ्यास जारी रखना। पर्याप्त अभ्यास के उपरान्त इसी क्रम में बाएं हाथ से अभ्यास।

* शेष समय, 30 सेकंड दाएं हाथ से तंकार और 30 सेकंड बाएं हाथ से तंकार, इस क्रम में निरंतर अभ्यास। दोनों हाथों से तंकार के आघात समान हो।

कालांश-2 * 10 मिनट - तंकार अभ्यास। 'दायाँ' कह कर दाएं हाथ से 30-35 सेकंड तंकार वादन, 'बायाँ' कह कर बाएं हाथ से 30-35 सेकंड तंकार वादन। बीच में अल्पविराम करते हुए वादन जारी रखना।

* 15 मिनट - अनुतंकार अभ्यास। तंकार अभ्यास के उपरोक्त क्रम में दाएं तथा बाएं हाथों से अनुतंकार अभ्यास।

* 20 मिनट - तंकार एवं अनुतंकार अभ्यास। 32-32, 28-28, 24-24, 20-20 इनमें से प्रत्येक समूह का 2 मिनट तंकार तथा 2 मिनट अनुतंकार अभ्यास।

तंकार-अनुतंकार अभ्यास के समय ध्यान देने योग्य बिंदु

- अ) वाद्य धारण करने की पद्धति।
- आ) शारिकाएं पकड़ने की पद्धति।
- इ) उंगलियों तथा कलाईयों का बिना सख्ती के सहजता से चलन।
- ई) आनक के केंद्र में आघात।
- उ) दोनों शारिकाओं के आघातों में समानता एवं समान अंतर।
- ऊ) मुख तथा शरीर में बिना किसी विकृति के सहज स्थिति में वादन।
- ए) तंकार की अपेक्षा अनुतंकार अभ्यास के लिए अधिक समय देना।

इनकी ओर ध्यान देते समय, सभी बातों को आरंभ में ही, एक ही बार ठीक करने का आग्रह न करते हुए इन्हें अभ्यास के दौरान धीरे-धीरे लागू करने का ध्यान रखें।

कालांश-3 व 4 16-16, 14-14, 12-12, 10-10, 8-8, 6-6, 4-4, एवं 2-2 इनमें से प्रत्येक समूह का 2 मिनट तंकार तथा 2 मिनट अनुतंकार अभ्यास।

कालांश-5 * सम-संख्यक समूह की भांति विषम-संख्यक समूह में वादन अभ्यास। 17-17, 15-15, 13-13, 11-11, 9-9, 7-7, 5-5 एवं 3-3 इनमें से प्रत्येक समूह का 2 मिनट तंकार तथा 2 मिनट अनुतंकार अभ्यास।

कालांश-6 * सम-विषम संख्यक समूह में वादन अभ्यास। 8-9, 7-8, 6-7, 5-6, 4-5, 3-4, 2-3, 1-2 इनमें से प्रत्येक समूह का 2 मिनट तंकार तथा 2 मिनट अनुतंकार अभ्यास।

प्रयोग पाठ अभ्यास

प्रत्येक पाठ मुखोद्गत करने के बाद वादन करें। मुंह से उच्चारण करते हुए वादन करना उचित नहीं। एक कदम पर दो तंकार आने वाले पाठों में केवल तंकार वादन का अभ्यास करें।

कालांश-7 * पाठ 1, 2, 3 - प्रत्येक पाठ का 3 मि. तंकार तथा 3 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 4, 5 - प्रत्येक पाठ का 4 मि. तंकार तथा 4 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* शेष समय, पाठ 6 का केवल तंकार में अभ्यास।

कालांश-8 * पाठ 4, 5 - प्रत्येक पाठ का 2 मि. तंकार तथा 2 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 6 - 4 मि. केवल तंकार में अभ्यास।

* पाठ 7, 8, 9, 10, 11, 12 - प्रत्येक पाठ का 2 मि. तंकार तथा 2 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

एक मात्रा में 2 तंकार आने वाले पाठों का केवल तंकार वादन का अभ्यास करना।

आनक प्रयोग पाठ

	दा - दाहिना हाथ		बा - बायां हाथ					
	दा		दा		बा		बा	
1	॥ त -	त -	त -	त -	॥		॥	
2	॥ दा दा त	दा दा त	दा दा त	दा दा त	॥		॥	
3	॥ दा दा त	दा दा त	दा दा त	दा दा त	॥		॥	
4	॥ दा दा त	दा दा त	दा दा त	दा दा त	॥		॥	
5	॥ दा दा <u>तत</u>	दा दा <u>तत</u>	दा दा त	दा दा त	॥		॥	
6	॥ दा दा <u>तत</u>	दा दा <u>तत</u>	दा दा <u>तत</u>	दा दा त	॥		॥	
7	॥ दा दा त	दा दा त	दा दा त	दा दा त	॥		॥	
8	॥ दा दा <u>तत</u>	दा दा <u>तत</u>	दा दा <u>तत</u>	दा दा त	॥		॥	

9	॥	दा दा <u>त त</u>	दा त		दा दा <u>त त</u>	दा त		बा त	बा त		बा त	-	॥
10	॥	दा त	दा त		दा त	-		बा बा <u>त त</u>	बा त		बा बा <u>त त</u>	बा त	॥
11	॥	दा त	दा त		दा दा <u>त त</u>	दा त		बा त	बा त		बा बा <u>त त</u>	बा त	॥
12	॥	दा दा <u>त त</u>	दा त		दा त	दा त		बा बा <u>त त</u>	बा त		बा त	बा त	॥

प्राथमिक पाठ अभ्यास

प्रयोग पाठों के अनुसार कुछ पाठ नीचे दिये हैं। लेकिन वादन के समय अनुक्रम से दायें-बायें हाथों से वादन करना। प्रत्येक पाठ पहले मुँह से कहने के पश्चात् वादन करें। लेकिन वादन के समय मुँह से पाठ दोहराने की आवश्यकता नहीं। प्रारंभ में अभ्यास मंदगति में करते हुये क्रमशः संचलन गति में करें। स्थिर स्थिती में पक्का अभ्यास होने के बाद, अल्प समय के लिये मितकाल में तथा अधिक समय संचलन में अभ्यास किया जाय। पणव अथवा अन्य ताल माध्यम के अनुसार वादन। एक पाठ का अच्छी तरह से वादन करने की क्षमता आने के बाद ही अगला पाठ प्रारंभ करें। इन पाठों के संबंधित साथी शंख पाठ एवं साथी वंशी पाठ का समायोजन करते हुये पणव के साथ सांघिक वादन करें।

आनक प्राथमिक पाठ - केरवा ताल

	दा - दाहिना हाथ				बा-बायां हाथ								
1	॥	त	-		-	-		त	-		-	-	॥
		दा			बा			दा			बा		
2	॥	त	-		त	-		त	-		त	-	॥
		दा	बा		दा	बा		दा	बा		दा		
3	॥	त	त		त	त		त	त		त	-	॥
		दा	बा		दा			दा बा	दा बा		दा बा	दा	
4	॥	त	त		त	-		<u>तत</u>	<u>तत</u>		<u>तत</u>	त	॥
		दा बा	दा बा		दा बा	दा		दा बा	दा बा		दा बा	दा	
5	॥	<u>तत</u>	<u>तत</u>		<u>तत</u>	त		<u>तत</u>	<u>तत</u>		<u>तत</u>	त	॥
		दा बा	दा बा		दा			दा बा	दा बा		दा		
6	॥	<u>तत</u>	<u>तत</u>		त	-		<u>तत</u>	<u>तत</u>		त	-	॥

कालांश-9 * पाठ 1, 2 - प्रत्येक का 2 मि. तंकार तथा 2 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 3 - 10 मि तंकार तथा 10 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 4 - 5 मि. तंकार तथा 5 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

कालांश-10 * पाठ 3 - 5 मि. तंकार तथा 5 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 4 - 5 मि. तंकार तथा 5 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 5 - 10 मि. तंकार तथा 10 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

कालांश-11 * पाठ 3 - 2 मि. तंकार तथा 2 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 4 - 2 मि. तंकार तथा 2 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 5 - 10 मि. तंकार तथा 10 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 6 - 5 मि. तंकार तथा 5 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

कालांश-12 * पाठ 3, 4 - उभय पाठों का 2-3 मि. तंकार-अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 5, 6, 7 - प्रत्येक पाठ का 5 मि. तंकार तथा 5 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* शेष समय, पाठ 8 का अभ्यास।

प्राथमिक पाठ - केरवा ताल

7	दा बा दा बा ॥ <u>तततत</u> त	दा <u>तततत</u> त	दा <u>तततत</u> त	दा <u>तततत</u> त	दा <u>तततत</u> त	॥
	त्र = <u>त"त"त"त"</u>					
8	॥ त्र त	त्र त	त्र त	त्र त	॥	

9	॥ <u>तततत</u> <u>तततत</u>	त	-		<u>तततत</u> <u>तततत</u>	त	-	॥
10	॥ त्र s	त	-		त्र s	त	-	॥
11	॥ <u>तततत</u> त्र	त	-		<u>तततत</u> त्र	त	-	॥
12	॥ <u>तत</u> त्र	त	-		<u>तत</u> त्र	त	-	॥

कालांश-13 * पाठ 3, 4

- उभय पाठों का 2-3 मि. तंकार-अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 5, 6, 7

- प्रत्येक पाठ 2-3 मि. तंकार तथा 2-3 मि. अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 8

- 2-3 मि. अभ्यास।

* पाठ 9

- 10 मि. अभ्यास।

* पाठ 10

- 10 मि. अभ्यास।

कालांश-14 * पाठ 3, 4, 5, 6, 7

- सभी पाठों का 5 मि. तंकार-अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 8,9

- उभय पाठ 5 मि. अभ्यास।

* पाठ 10

- 5 मि. अभ्यास।

* पाठ 11,12

- प्रत्येक का 2-2 मि. अभ्यास।

* शेष समय, रचना किरण प्रस्ताव पद प्रारंभ।

कालांश-15 * पाठ 3, 4, 5, 6, 7 - सब पाठ 5 मि. तंकार-अनुतंकार में अभ्यास।

* पाठ 8, 9, 10, 11, 12 - सब पाठ 10 मि. अभ्यास।

* शेष समय, रचना किरण।

कालांश-16 * पाठ 8, 9, 10, 11, 12 - सब पाठ 10 मि. अभ्यास

* शेष समय, रचना किरण।

रचना अभ्यास

रचना अभ्यास के पहले, सभी प्राथमिक पाठों का संचलन में वादन करने की क्षमता प्राप्त होनी चाहिए। विशेषतः रगन-वादन सुलभता से आना चाहिए। रचना का एक-एक भाग मुखोद्गत करते हुए क्रमशः अभ्यास करना है। एक भाग का वादन अच्छा आने के बाद ही, अगला भाग शुरू करें। प्रारंभ में अभ्यास मंदगति में तथा क्रमशः संचलन गति में हो। प्राथमिक पाठ की सूचनाएं यहां भी लागू हैं। एक चरण का अभ्यास होने के बाद, शंख एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास स्थिर स्थिति में तथा संचलन में किया जाए।

रचना किरण अभ्यास का क्रम निम्नानुसार हो। कठिन भाग का अभ्यास अधिक समय करें।

रचना किरण - अभ्यासक्रम

प्रस्ताव पद

1 | त त | 2 तत 3 | त तत |
4 | त त | त तत | प्रस्ताव पद का पूर्वार्ध। 5 तततत

- 6 त्र 7 | त त्र |
- 8 | त त्र | त - | प्रस्ताव पद का उत्तरार्ध।
- 9 || त त | त तत | त त्र | त - ||
- भाग 4 तथा 8 जोड़ने से प्रस्ताव पद पूर्ण होता है।

चरण-1

- 1 | त त्र | 2 | त त |
- 3 | त त्र | त त | चरण का पहला भाग।
- 4 तत्र 5 | तत्र तत्र | 6 | तत तत |
- 7 | तत्र तत्र | तत तत | चरण का दूसरा भाग।
- 8 चरण का पहला तथा दूसरा भाग जोड़ कर बजाने पर आधे चरण का वादन पूरा होगा।
- | त त्र | त त | तत्र तत्र | तत तत |
- चरण का तीसरा भाग, पहले भाग जैसा ही होने के कारण तीसरे भाग के अलग अभ्यास की आवश्यकता नहीं।
- 9 | त्र s | त - | चरण का चौथा भाग।

10 चरण का तीसरा तथा चौथा भाग जोड़ कर बजाने पर अंतिम आधे चरण का वादन पूरा होगा।

| त त्र | त त | त्र s | त - |

11 पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने पर चरण-1 का वादन पूरा होगा। उसके बाद शंख और पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

|| त त्र | त त | त्र त्र | तत तत |

| त त्र | त त | त्र s | त - :||

चरण-2

1 | त्र तत | 2 | त्र तत | त त |

चरण का पहला एवं तीसरा भाग।

3 त--त 4 | त--त तत |

5 | त--त तत | त त्र | चरण का दूसरा भाग।

इसमें से अंतिम त्र को वर्जित कर बजाने से चरण के चौथे भाग का वादन होगा।

6 भाग एक और दो जोड़कर बजाने से प्रथम चरणार्ध पूरा होगा।

| त्र तत | त त | त--त तत | त त्र |

7 उपरोक्त चरणार्ध से अंतिम त्र वर्जित कर बजाने से अंतिम चरणार्ध का वादन पूरा होगा।

| तत्र तत | त त | त--त तत | त - |

8 पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने से, दूसरे चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद शंख और पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

॥ तत्र तत | त त | त--त तत | त त्र |

| तत्र तत | त त | त--त तत | त - ॥

आनक

किरण

केरवा - १२०

॥ ॐ ॥ त त | त तत | त त्र | त - ॥

॥ त त्र | त त | तत्र तत्र | तत तत |

| त त्र | त त | त्र s | त - ॥

॥ तत्र तत | त त | त--त तत | त त्र |

| तत्र तत | त त | त--त तत | त - ॥

रचना किरण वादनारंभ के पहले निम्नानुसार रणन-वादन करें।

॥ त्र s | त - | त्र s | त - ॥

इसी प्रकार किसी भी रचना के वादनारंभ के पहले उपरोक्त रणन-वादन अवश्य करें। दो रणन वादनों के मध्य में दल-प्रमुख जोर से रचना का नाम पुकारेगा।

रचना में 'प्रस्ताव-पद' हो, तो सब वादक एक साथ उसका एक बार वादन करेंगे। उसके बाद प्रत्येक चरण का दो-दो बार वादन होगा। अंतिम चरण के बाद, फिर से प्रस्ताव-पद का वादन करने के बजाय सीधे प्रथम चरण से वादन प्रारंभ होगा।

रचना किरण का अभ्यास इस तरह पूर्ण होने के पश्चात्, वादन-शुद्धता की ओर 5-6 दिन विशेष ध्यान देते हुए स्थिर तथा संचलन में अभ्यास करना। 2-3 दिन संघस्थान के आस-पास के मार्गों पर सांघिक संचलन वादन का अभ्यास करना।

आनक पाठ - केरवा ताल

आगे की रचनाओं का अभ्यास करने से पहले, निम्नांकित आनक पाठों का अभ्यास अनिवार्य है। पहले इन पाठों को मुखोद्गत करते हुए स्थिर तथा संचलन में पणव के साथ अभ्यास करें। एक पाठ का वादन अच्छा करने का विश्वास आने के बाद ही अगले पाठ का अभ्यास करें।

	दा बा दा बा
1	॥ <u>तत</u> <u>तततत</u> <u>तत</u> त ॥
	दा त्र दा बा
2	॥ <u>तत</u> <u>त-तत</u> <u>तत</u> त ॥

	दा बा त्र बा
3	॥ <u>तत</u> <u>तत-त</u> <u>तत</u> त ॥
	दा बा दा त्र
4	॥ <u>तत</u> <u>ततत-</u> <u>तत</u> त ॥

दा ऋ ऌ वा

5 || तत त--त | तत त ||

6 || तत ऋ | तत त ||

7 || तत तत्र | तत त ||

8 || तत्र तत्र | तत त ||

9 || तत त्रत | तत त ||

10 || तत -त | तत त ||

11 || तत -त्र | तत त ||

12 || तत --तत | तत त ||

13 || त्रत त्रत | तत त ||

14 || तत्र sत | तत त ||

15 || ऋ sत | तत त ||

16 || ऋ s | तत त ||

17 || ऋ s | s त ||

18 || थ थ | तत त ||

19 || थ्र थ्र | तत त ||

20 || थत थत | तत त ||

21 || + + | तत त ||

22 || तत ++ | तत त ||

23 || ++ ++ | तत त ||

24 || त्रत तत्र | तत त ||

रचना भूष - अभ्यासक्रम

चरण-1

1	थ	त्र		2	<u>तत</u>	<u>तत्र</u>		
3	थ	त्र	<u>तत</u>	<u>तत्र</u>	चरण का पहला एवं तीसरा भाग।			
4	<u>तत्र</u>	<u>तत</u>	वा	वा	5	<u>थत</u>	<u>थत</u>	
6	<u>तत्र</u>	<u>तत</u>	थत	थत	चरण का दूसरा भाग।			
7	थ	त्र	<u>तत</u>	<u>तत्र</u>	<u>तत्र</u>	<u>तत</u>	<u>थत</u>	<u>थत</u>
								प्रथम चरणार्ध।
8	<u>तत्र</u>	<u>तत</u>	त्र	त	चरण का चौथा भाग।			
9	थ	त्र	<u>तत</u>	<u>तत्र</u>	<u>तत्र</u>	<u>तत</u>	त्र	त
								अंतिम चरणार्ध।

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने से, चरण-1 का वादन पूरा होगा। उसके बाद वंशी तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

पूरा होगा। उसके बाद वंशी तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

॥ त्र तत | त्र तत | त्र तत | तततत तततत |
 | त--- त तत | तत्र तत | -त तत | त्र त :॥

चरण-3 1 | त्र त | ++ + | चरण का पहला व तीसरा भाग।

2 | त्र त | तत त | चरण का दूसरा भाग।

3 | त्र त | ++ + | त्र त | तत त |
 प्रथम चरणार्ध।

4 | त्र s | त - | चरण का चौथा भाग।

5 | त्र त | ++ + | त्र s | त - |
 अंतिम चरणार्ध।

6 पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने से, चरण-3 का वादन पूरा होगा। उसके बाद वंशी तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

॥ त्र त | ++ + | त्र त | तत त |
 | त्र त | ++ + | त्र s | त - :॥

रचना भूप

रणन के बाद रचना का वादन करें। प्रत्येक चरण का दो-दो बार वादन करें।

आनक

भूप

केरवा - १२०

॥ ॐ ॥	थ	त्र		<u>तत</u>	<u>तत्र</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		<u>थत</u>	<u>थत</u>	
	थ	त्र		<u>तत</u>	<u>तत्र</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		त्र	त	॥
॥	त्र	<u>तत</u>		त्र	<u>तत</u>		त्र	<u>तत</u>		<u>तततत</u>	<u>तततत</u>	
	<u>त--त</u>	<u>तत</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		<u>-त</u>	<u>तत</u>		त्र	त	॥
॥	त्र	त		<u>++</u>	+		त्र	त		<u>तत</u>	त	
	त्र	त		<u>++</u>	+		त्र	s		त	-	॥

रचना उदय - अभ्यासक्रम

केरवा ताल के किरण एवं भूप रचनाओं के अभ्यासोपरांत उदय रचना का अभ्यास करें। यह रचना खेमटा ताल में है। केरवा ताल वादन तथा खेमटा ताल वादन पद्धतियों में और रणन वादन में अंतर होने के कारण खेमटा ताल के कुछ प्राथमिक पाठों के अभ्यास के बाद ही, रचना उदय का अभ्यास करें। खेमटा ताल पद्धति का वादन तथा रणन संघ की विशेष देन है।

आनक पाठ - खेमटा ताल

खेमटा ताल की रचनाओं का वादन अधिक आत्मविश्वास के साथ करने के लिए, प्रत्येक पाठ को पहले मुंह से बोल कर, बाद में वादन करें। मुंह से बोलते हुए वादन करने की आवश्यकता नहीं।

(दा - दाएं हाथ से। बा - बाएं हाथ से।)

पाठ 1

दा	बा	दा	बा	दा	बा			
	त	त	त	,	त	त	त	
	1	2	3		4	5	6	

छः तंकारों से युक्त इस पाठ का वादन 5-6 मि. तक सहजता से करें। खेमटा ताल की विशेषता प्रकट करने की दृष्टि से पहला दाहिना तंकार तथा चौथा बाया तंकार किंचित् मात्र अधिक आघात से बजाना। इसी विधान का अनुसरण खेमटा ताल की सभी रचनाओं के वादन तथा रणन में करना अपेक्षित है।

पाठ 2

दा	बा	दा	बा	दा	बा			
	त्र	S	S	,	S	S	S	

उपरोक्त पाठ का वादन अनुतंकार में करने से खेमटा ताल का रणन प्राप्त होगा।

पाठ 3

दा	त्र	दा	बा	त्र	बा			
	त	-	त	,	त	-	त	

इस पाठ के प्रथम गट में बायी यति तथा दूसरे गट में दाहिनी यति होने के कारण, वादन के समय एक यति का अंतर (1/6 सेकंद) छोड़ कर क्रमशः दायें-दायें तथा बायें-बायें हाथ से तंकार वादन करना।

खेमटा ताल में प्रथम गट का वादन दा बा दा तथा दूसरे गट का वादन बा दा बा इस प्रकार की पद्धति का पालन खेमटा ताल की सभी रचनाओं के वादन में अपेक्षित में है। रचना में जहाँ भी यति आती है उस हाथ को विश्राम देकर आगे दूसरे हाथ से वादन जारी रखना।

आनक पाठ - खेमटा ताल (जारी)

दा - दाहिना हाथ। बा - बायां हाथ।

3	दा	क्र	दा	बा	क्र	बा
	त	-	त	,	त	- त
4	दा	बा	दा	बा	क्र	क्र
	त	त	त	,	त	- -
5	दा	बा	दा	बा	क्ष	क्र
	त्र	S	S	,	त	- -
6	दा	बा	दा	बा	क्ष	बा
	त्र	S	S	,	त	- त
7	दा	बा	दा	बा	दा	बा
	त्र	S	S	,	त	त त
8	दा	क्र	क्ष	बा	दा	बा
	त	-	-	,	त	त त
9	दा	क्र	दा	बा	दा	बा
	त	-	त	,	त	त त

10	दा	क्र	दा	बा	दा	बा
	त	-	त	,	त्र	S S
11	दा	बा	दा	बा	दा	बा
	त	त	त	,	त्र	S S
12	दा	बा	दा	बा	क्ष	बा
	त	त	त	,	त	- त
13	दा	क्र	दा	बा	दा	क्र
	त	-	त	,	त	त -
14	दा	बा	दा	बा	दा	क्र
	त	त	त	,	त	त -
15	दा	बा	दा	बा	दा	क्र
	त्र	S	S	,	त	त -
16	दा	बा	क्ष	बा	दा	क्र
	त	त	-	,	त	त -

रचना उदय - अभ्यासक्रम

प्रस्ताव पद

- 1 | त्रस्स , स्स्स | 2 | त-त , त-त |
- 3 | त्रस्स , स्स्स | त-त , त-त | प्रस्ताव पद पूर्वार्ध।
- 4 | त-- , ततत | त-- , --- | प्रस्ताव पद उत्तरार्ध।
- 5 || त्रस्स , स्स्स | त-त , त-त | त-- , ततत | त-- , --- ||

चरण-1

- 1 | त-त , त-त | त-त , त-त | चरण का पहला और तीसरा भाग।
- 2 | त्रस्स , स्स्स | त-- , त-- | चरण का दूसरा भाग।
- 3 | त-त , त-त | त-त , त-त | त्रस्स , स्स्स | त-- , त-- |
प्रथम चरणार्ध।
- 4 | त्रस्स , त-त | त-- , --- | चरण का चौथा भाग।

5 | त-त , त-त | त-त , त-त | ब्र s s , त-त | त-- , --- |
 अंतिम चरणार्ध।

6 || त-त , त-त | त-त , त-त | ब्र s s , s s s | त-- , त-- |
 | त-त , त-त | त-त , त-त | ब्र s s , त-त | त-- , ---: ||

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने से, चरण-1 का वादन पूरा होगा। उसके बाद शंख तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

चरण-2 1 | ब्र s s , त-त | 2 | ततत , त-- |

3 | ब्र s s , त-त | ततत , त-- | चरण का पहला और तीसरा भाग।

4 | त-त , तत- | 5 | त-त , तत- | ततत , त-- |
 चरण का दूसरा भाग।

6 | ब्र s s , त-त | ततत , त-- | त-त , तत- | ततत , त-- |
 प्रथम चरणार्ध।

7 | त-त , तत- | त-- , --- | चरण का चतुर्थ भाग।

8 | ब्र s s , त-त | ततत , त-- | त-त , तत- | त-- , --- |
 अंतिम चरणार्ध।

9 || त्रस्स , त-त | ततत , त-- | त-त , तत- | ततत , त-- |
 | त्रस्स , त-त | ततत , त-- | त-त , तत- | त-- , ---: ||

पहले दोनों चरणार्थों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने से, चरण-2 का वादन पूरा होगा। उसके बाद शंख तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

रचना - उदय

रणन के बाद रचना का वादन करें। प्रस्ताव पद का वादन केवल एक बार तथा प्रत्येक चरण का दो-दो बार वादन करें।

आनक

उदय

खेमटा - ३६०

	ॐ		त्रस्स , स्स्स	त-त , त-त	त-- , ततत	त-- , ---	
	त-त , त-त	त-त , त-त	त्रस्स , स्स्स	त-- , त--			
त-त , त-त	त-त , त-त	त्रस्स , त-त	त-- , ---:				
	त्रस्स , त-त	ततत , त--	त-त , तत-	ततत , त--			
त्रस्स , त-त	ततत , त--	त-त , तत-	त-- , ---:				

रचना श्रीराम - अभ्यासक्रम

प्रस्ताव पद	1		<u>तत</u>	<u>तत-त</u>		2		त्र	<u>तत</u>				
3		<u>तत</u>	<u>तत-त</u>		त्र	<u>तत</u>		प्रस्ताव पद पूर्वार्ध।					
4		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		त	-		प्रस्ताव पद उत्तरार्ध।					
5		<u>तत</u>	<u>तत-त</u>		त्र	<u>तत</u>		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		त	-	
चरण-1	1		त्र	<u>तत</u>		2		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>				
3		त्र	<u>तत</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		चरण का पहला और तीसरा भाग।					
4		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		5		त्र	<u>सत</u>					
6		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		त्र	<u>सत</u>		चरण का दूसरा भाग।					
7		त्र	<u>तत</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		त्र	<u>सत</u>	

प्रथम चरणार्ध।

8 | त-तत तत | त - | चरण का चौथा भाग।

9 | त्र तत | तत्र तत | त-तत तत | त - |
अंतिम चरणार्ध।

10 || त्र तत | तत्र तत | त-तत तत | त्र सत |
| त्र तत | तत्र तत | त-तत तत | त - ::

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ काल अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों चरणार्धों को जोड़ कर बजाने से, चरण-1 का अभ्यास पूरा होता है। उसके बाद शंख तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

चरण-2 1 | तत-त तत | 2 | तत्र तत |

3 | तत-त तत | तत्र तत | चरण का पहला और तीसरा भाग।

4 | तत-त तत | त्र स | चरण का दूसरा भाग।

5 | तत-त तत | तत्र तत | तत-त तत | त्र स |
प्रथम चरणार्ध।

- 6 | तत-त तत्र | त - | चरण का चौथा भाग।
- 7 | तत-त तत | तत्र तत | तत-त तत्र | त - |
अंतिम चरणार्ध।
- 8 || तत-त तत | तत्र तत | तत-त तत | त्र S |
| तत-त तत | तत्र तत | तत-त तत्र | त - :||

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने से, चरण-2 का वादन पूरा होगा। उसके बाद शंख तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

- चरण-3 1 | त्रत त्रत | 2 | त--त तत |
- 3 | त्रत त्रत | त--त तत | चरण का पहला और तीसरा भाग।
- 4 | तत -त | त्र त | चरण का दूसरा भाग।
- 5 | त्रत त्रत | त--त तत | तत -त | त्र त |
प्रथम चरणार्ध।

6 | तत -त | त - | चरण का चौथा भाग।

7 | त्रत त्रत | त--त तत | तत -त | त - |
अंतिम चरणार्ध।

8 || त्रत त्रत | त--त तत | तत -त | त्र त |
| त्रत त्रत | त--त तत | तत -त | त - :||

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़ कर बजाने से, चरण-3 का वादन पूरा होगा। उसके बाद शंख तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

रचना - श्रीराम

रणन के बाद रचना का वादन करें । प्रस्ताव पद का वादन केवल एक बार तथा प्रत्येक चरण का दो-दो बार वादन करें।

आनक

श्रीराम

केरवा - १२०

॥ ॐ ॥	<u>तत</u>	<u>तत-त</u>		त्र	<u>तत</u>		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		त	-	॥
॥	त्र	<u>तत</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		त्र	<u>s त</u>	
	त्र	<u>तत</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		<u>त-तत</u>	<u>तत</u>		त	-	॥
॥	<u>तत-त</u>	<u>तत</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		<u>तत-त</u>	<u>तत</u>		त्र	s	
	<u>तत-त</u>	<u>तत</u>		<u>तत्र</u>	<u>तत</u>		<u>तत-त</u>	<u>तत्र</u>		त	-	॥
॥	<u>त्रत</u>	<u>त्रत</u>		<u>त--त</u>	<u>तत</u>		<u>तत</u>	<u>-त</u>		त्र	त	
	<u>त्रत</u>	<u>त्रत</u>		<u>त--त</u>	<u>तत</u>		<u>तत</u>	<u>-त</u>		त	-	॥

किरण, भूप, उदय तथा श्रीराम इन चारों रचनाओं का अभ्यास करने के पश्चात् केरवा तथा खेमटा तालों के विशेष प्रगत पाठों का अभ्यास करें । अगली रचनाओं का अभ्यास करते समय रचना पुस्तक में दिये क्रम का पालन करें । शंख के साथी-रचनाओं के अभ्यास के साथ-साथ वंशी के साथी-रचनाओं का तथा मंदगति रचनाओं का अभ्यास भी करना ।

आगे की रचनाओं का अभ्यास

यहां उपरोक्त चार रचनाओं के वादन अभ्यासक्रम की जानकारी दी गयी है । आगे की रचनाओं का अभ्यास करते समय इसी क्रम का अनुसरण कर सकते हैं ।

साधारणतः एक चरण के चार भाग बनाते हुए, प्रथम भाग के पहले एवं दूसरे गण का अलग-अलग अभ्यास करने के बाद पूरे भाग का अभ्यास करना । इसी क्रम में द्वितीय भाग का अभ्यास करने के पश्चात इन दोनों भागों को जोड़ कर बनने वाले आघे चरण का अभ्यास करना । इसी प्रकार शेष आघे चरण का अभ्यास होने के उपरान्त पूरे चरण के वादन का अभ्यास करना । सामान्यतः चरण का प्रथम और तृतीय भाग समान होते हैं । लेकिन चौथे भाग का अंत द्वितीय से भिन्न होता है । कठिन भाग का अधिक अभ्यास करना चाहिये ।

रचानाओं का अभ्यास करते समय रचना-पुस्तक सामने रख कर लिपि देखते हुए, अभ्यास करना चाहिये । रचना लिपि बार-बार देखने से उसके प्रत्येक भाग का चित्र हमारे मनःपटल पर स्पष्टतया अंकित होगा । इससे अपेक्षानुसार स्वरों का वादन, अवग्रह इत्यादि सही ढंग से आ रहे हैं या नहीं इसका अवलोकन कर सकते हैं । इस प्रकार के अवलोकन-युक्त वादन से रचना की परिशुद्धता रखने में आसानी होती है । रचना-पुस्तक का उपयोग केवल अभ्यास के समय ही करना चाहिये । संचलन, समारंभ आदि कार्यक्रमों में रचना-पुस्तक का उपयोग न करें ।

आनक प्रगत पाठ - केरवा ताल

1 || तत ऋ-तत | तत त ||

2 || तत च-तत | तत त ||

3 || तत त्र-तत | तत त ||

4 || तत तत-त्र | तत त ||

5 || तत त्रत-त | तत त ||

6 || तत त--त्र | तत त ||

7 || तत त्र--त्र | तत त ||

8 || -त -त | -त त ||

9 || -त्र -त | -त्र त ||

10 || -त तत-- | तत त ||

11 || तततत तततत | तततत तततत | तततत तततत | त - ||

12 || त्र s | s s | s s | त - ||

13 || त्र s | त-तत तत-त | त्र s | त - ||

14 || त्र s | तत्र sत | त्र sत | त - ||

15 || त्र त--त | त्र त--त | त्र तत-त्र | त - ||

16 || त्रत त्रत | त्र S | Sत तत्र | त - ||

17 || त्रत तत्र | तत्र Sत | त्र-तत त्र | त - ||

आनक प्रगत पाठ - खेमटा ताल

	दा	बा	दा	बा	दा	बा
1		त	-	त्र	,	त त त
2		त	-	त्र	,	त - त
3		त	-	त्र	,	त - त्र
4		त	-	त	,	त - त्र
5		त	त	त	,	त - त्र
6		त्र	S	S	,	त - त्र

	दा	बा	दा	बा	दा	बा
7		त्र	S	S	,	S त -
8		त्र	S	S	,	S S त
9		त्र	S	S	,	S त त
10		त्र	S	S	,	S त त्र
11		त्र	S	S	,	त त त्र
12		त	त	त	,	त त त्र

	दा	बा	दा	बा	दा	बा
13		त	त	-	,	त त -
14		त्र	त	-	,	त्र त -
15		त्र	त	-	,	त त त
16		त्र	त	-	,	त्र S S
17		त्र	-	त	,	त्र - त
18		त्र	-	त्र	,	त्र - त्र

19 | त्र S S , त त्र त |

20 | त त्र त , त त्र त |

21 | त त्र त , त - त्र |

22 | त त्र त , त्र S S |

23 | त - त्र , S S S |

24 | त त त , त्र त त |

25 || त त त , त त त | त त त , त - - ||

26 || त्र S S , S S S | S S S , त - - ||

27 || त - त , त - त | त - त , त - - ||

28 || त्र S S , त त त | त्र S S , त - - ||

29 || त्र S S , त - त्र | त - त्र , त - - ||

30 || त - त्र , त - त्र | त - त्र , त - - ||

31 || त त त , त त त | त त त , त त त | त त त , त त त | त - - , - - - ||

32 || त्र S S , S S S | S S S , S S S | S S S , S S S | त - - , - - - ||

33 || त्र S S , त त त | त्र S S , त - त | त्र S S , त - त्र | त - - , - - - ||

वंशी शिक्षण विधि

प्रति दिन 45 मिनट के अनुसार 20 दिन सतत् अभ्यास करने पर प्रायः एक रचना का विशुद्ध रूप से वादन करने की क्षमता आ सकेगी। 20 दिन एक साथ अभ्यास करना असंभव हो, तो पहले न्यूनतम 6-7 दिन अभ्यास करते हुए शिक्षार्थियों को उसी का स्वाध्याय एक सप्ताह तक करने की सुविधा उपलब्ध कराना। पश्चात् 6-7 दिन अगला अभ्यास तथा शिक्षार्थियों द्वारा एक सप्ताह का स्वाध्याय; फिर से इसी क्रम का अनुसरण करते हुए तीन चरणों में पूरा अभ्यास कर सकते हैं।

सप्त स्वरों के अभ्यास के लिये 5-6 दिन, प्राथमिक पाठों के अभ्यास के लिये 9-10 दिन। इस प्रकार 16 दिनों के कालांशों का पाठ्यक्रम यहाँ प्रस्तुत किया है। उसके बाद रचना का अभ्यास करना।

शिक्षार्थियों की गुणवत्ता, ग्रहणशक्ति, तथा वादन में प्रगति देखकर पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करते हुए, उसी प्रकार नये-नये प्रयोगों का अवलंब कर, 10-12 दिन प्राथमिक पाठों का अभ्यास होने पर भी रचना अभ्यास कर सकते हैं।

संगीत के अभ्यासक, संगीत के प्राथमिक बातों के जानकार तथा संगीत स्वरों की थोड़ी सी जानकारी रखनेवाले शिक्षार्थी सुलभता से वंशी सीख सकते हैं।

कालांश-1 * 15 मि. प्राथमिक जानकारी।

अ) वाद्य का सामान्य परिचय।

आ) वंशी पकड़ने की पद्धति।

वंशी का मुखाग्र मुँह में रखते समय होठों को थोड़ा अंदर लेकर उनके मध्य में पकड़ना। शेष विवरण वंशी की सामान्य जानकारी में देखिये।

इ) वंशी फूँकने की विधा।

गले में सख्ती लाए बिना तथा बिना किसी उतार-चढ़ाव के सीधे मुखाग्र से ही हवा बाहर निकले, इस प्रकार सहजता से फूँक लगानी चाहिये। फूँकते समय हवा मुखाग्र के आसपास से न निकले इसलिये होंठों को दोनों ओर से ठीक प्रकार बंद करें।

(ई) वाद्य अनुरक्षण, मुखाग्र का विशेष ध्यान।

* 30 मि. - स्वर का अभ्यास।

ऊपर के स्वर-रंध से बायीं तर्जनी उठा कर उपरोक्त विधा से अपेक्षित फूँक लगाने पर स स्वर प्राप्त होता है। स स्वर का 4-5 सेकंड दीर्घ-वादन। अल्पविराम के बाद 4-5 मि. अभ्यास आगे जारी रखना। स स्वर पर नियंत्रण आने के बाद, ऊपर का स्वररंध बंद करते हुए नीचे से एक, दो, तथा तीन स्वररंधों पर रखी हुई दाहिने हाथ की उंगलियां क्रमशः हटाते हुए अपेक्षित फूँक लगाने पर क्रमशः री, ग, म स्वर प्राप्त होते हैं। स स्वर के अभ्यासानुसार री, ग, म स्वरों का अभ्यास करना।

कालांश-2 *

15 मि. स, री, ग, म आरोह तथा म, ग, री, स, इस क्रम में अवरोह का अभ्यास करना। वादन करते समय आरोह में स्वरों का कंपन क्रमशः अधिक होने तथा अवरोह में कंपन क्रमशः कम होने की बात हमारे ध्यान में आयेगी।

आरोह-अवरोह करते समय प्रत्येक स्वर का 7-8 सेकंड वादन करें। दो स्वरों के बीच अल्पविराम देते हुए अलग से श्वाँस लेकर प्रत्येक स्वर का वादन करें। इसी को सांतर वादन कहते हैं। चारों स्वरों का अच्छा अभ्यास होने के बाद इनमें से किसी भी एक स्वर का 5-7 सेकंड इस प्रकार 2-3 मि. वादन करना ।

* 15 मि. स,री,ग,म के अनुसार प,ध,नि,सँ स्वरों का अभ्यास। इन स्वरों का वादन करते समय क्रमशः फूँक का स्तर अपेक्षित ऊँचाई तक बढ़ाते जाना। सँ स्वर पहले स से बड़ा है यह समझना तथा सप्तकों की कल्पना धीरे-धीरे देते जाना। स तथा सँ ये दोनों स्वर एक ही स्वरस्थान से निकलने पर भी उनकी फूँक में भिन्नता है यह बात मनोगत कराना।

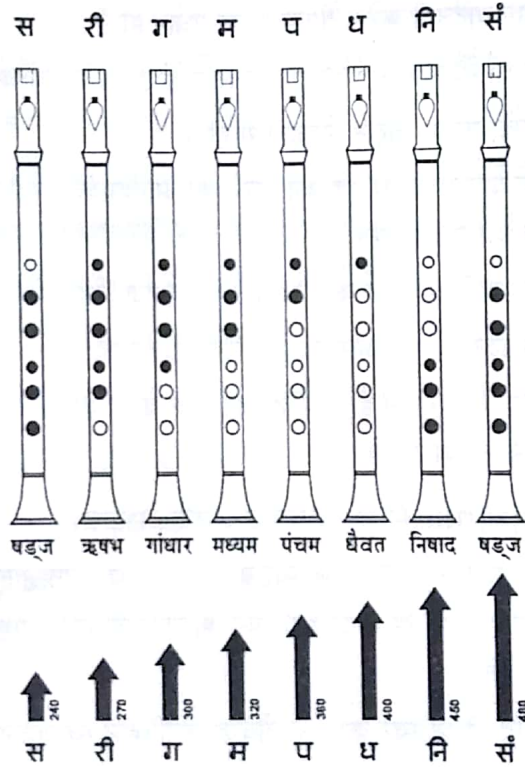
* 5 मि. स,री,ग,म,प,ध,नि,सँ का क्रमबद्ध अभ्यास। प्रत्येक स्वर का 7-8 सेकंड वादन। मध्य में अल्प विराम लेकर आवश्यकतानुसार श्वाँस लेते हुए आगे के स्वर का अभ्यास। इसी समय आरोह एवं स्वरों की अपनी-अपनी निश्चित ऊँचाई के बारे में जानकारी प्राप्त करना। स्वर मुहँ से बोलते या वंशी में बजाते समय, उस स्वर की निश्चित ऊँचाई में ही बोलने या वादन करने की ओर ध्यान देना। हमारा वादन सांतर-प्रधान है। किसी भी दो स्वरों में विराम न लेते हुए उसी फूँक में अगले स्वर का किया हुआ वादन 'निरंतर' कहलाता है। दाहिनी तीन उंगलियों से री,ग,म तथा बायीं तीन उंगलियों से प,ध,नि,सँ,स स्वर आते हैं, इसका स्मरण रहे।

स्वराभ्यास के समय ध्यान देने योग्य बिंदु:

* वाद्य पकड़ने की पद्धति।

* फूँक में बिना किसी उतार-चढ़ाव के निश्चित ऊँचाई का शुद्ध स्वरवादन।

वंशी स्वर परिचय



- * सब स्वरों का वादन एक श्वास में करने का प्रयास न करें। बीच-बीच में आवश्यकतानुसार श्वास लेकर वादन करना। निरंतर-प्रधान वादन न करें। वादन सांतर-प्रधान हो।
 - * उंगलियाँ तथा स्वरंध्रों के मध्य में थोड़ा भी अंतर न छोड़े ताकि संबंधित रंध्र पूर्णतः बंद रहे।
 - * उंगलियाँ सख्त न रखें; उनका चलन सहजता से हो।
 - * प्रत्येक स्वरवादन के बाद सभी रंध्र पुनः बंद करने की आवश्यकता नहीं है। वादन किए गए स्वर के स्थान से ही सीधे अगले स्वर का वादन करें।
 - * मुख के हावभाव एवं शरीर में बिना कोई विकृति के, सहज स्थिति में वादन।
 - * वादन के समय दृष्टि स्वरंध्रों की ओर न रहे, बल्कि सामने रहे।
- लेकिन इन सभी बातों को प्रारंभ में ही, एक ही बार ठीक करने का आग्रह न करते हुए, इन्हें अभ्यास के दौरान धीरे-धीरे लागू करने का ध्यान रखें।

कालांश-3 * 20 मि. - स, री, ग, म, प, ध, नि, सं का केवल आरोह अभ्यास।

- * 20 मि. - शिक्षार्थी स्वयं क्रमशः एक-एक स्वर का उच्चारण करे तत्पश्चात् उसी का वादन करे। इस अभ्यास के समय वंशी का मुखाग्र हर बार मुँह से दूर हटाने की आवश्यकता नहीं। मुखाग्र नीचे के होंठ पर रख कर ही स्वरों का उच्चारण कर सकते हैं।
- * शेष समय, इनमें से किसी भी स्वर का 5-6 सेकंड क्रमविहीन स्वरवादन।

- कालांश-4 * 10 मि. - स, री, ग, म, प, ध, नि, सं इस क्रम में केवल आरोह का अभ्यास।
- * 30 मि. - अवरोह की जानकारी प्राप्त करते हुए, सं, नि, ध, प, म, ग, री, स इस क्रम में केवल अवरोह का 5-6 मि. अभ्यास। तदुपरांत क्रमशः आरोह-अवरोह का अभ्यास।
- आरोह-अवरोह वादन अभ्यास करते समय म स्वरस्थान के बाद फूँक का वेग आरोह में क्रमशः बढ़ाते जाना एवं अवरोह में क्रमशः कम करना, इसे ठीक समझने की आवश्यकता है।
- वादन के समय आवश्यकतानुसार बीच में कहीं पर श्वांस ले सकते हैं। लेकिन इससे ताल की गति या स्वर में कोई अंतर या अवरोध उत्पन्न न हो इसकी सावधानी बरतें।
- मंद्र-मध्य-तार सप्तक की जानकारी प्राप्त करें।
- * शेष समय, किसी भी स्वर का 5-6 सेकंड क्रमविहीन स्वरवादन।
- कालांश-5 * 15 मि. आरोह-अवरोह वादन अभ्यास।
- * 25 मि. क्रम से एक-एक स्वर का उच्चारण कर, आरोह-अवरोह वादन का अभ्यास।
- * शेष समय, किसी एक स्वर का 5-6 सेकंड इस प्रकार क्रमविहीन स्वराभ्यास।

प्राथमिक पाठ अभ्यास

पणव अथवा अन्य ताल वाद्य के साथ वादन । अल्प विराम के समय में, ताल के साथ पाठ मुखोद्गत करना । प्रारंभ में कुछ समय अभ्यास मंदगति में तथा अधिक समय संचलन गति में करें । शुरू में स्थिर स्थिति में एवं क्रमशः मितकाल तथा संचलन में अभ्यास किया जाए । एक पाठ का अच्छी तरह से वादन करने की क्षमता आने के बाद ही अगला पाठ शुरू करें । यदि अनुकूल हो तो, आनक-पणव के साथ स्थिर स्थिति एवं संचलन में पाठों का सांघिक वादन करना ।

प्राथमिक पाठ

- 1 || स s s s- | री s s s- | ग s s s- | म s s s- |
 | प s s s- | ध s s s- | नि s s s- | सं s s s- | |
 | सं s s s- | नि s s s- | ध s s s- | प s s s- |
 | म s s s- | ग s s s- | री s s s- | स s s s- ||
- 2 || स स स स- | री री री री- | ग ग ग ग- | म म म म- |
 | प प प प- | ध ध ध ध- | नि नि नि नि- | सं सं सं सं- |

| सं सं सं सं- | नि नि नि नि- | ध ध ध ध- | प प प प-

| म म म म- | ग ग ग ग- | री री री री- | स स स स-

3 || सं स- री स- | ग स- म स- | प स- ध स- | नि स- सं स- |

| सं स- नि स- | ध स- प स- | म स- ग स- | री स- स स-

4 || सं स- ध स- | सं स- ध स- | नि स- म स- | नि स- म स-

| सं स- री स- | ग स- प स- | सं स- री स- | ग स- प स-

कालांश-6 * 20 मि. - पाठ 1 अभ्यास। * 25 मि. - पाठ 2 अभ्यास।

कालांश-7 * 10 मि. - पाठ 1 अभ्यास। * 15 मि. - पाठ 2 अभ्यास।

* 20 मि. - पाठ 3 अभ्यास।

कालांश-8 * 5 मि. - पाठ 1 अभ्यास। * 10 मि. - पाठ 2 अभ्यास।

* 10 मि. - पाठ 3 अभ्यास। * 20 मि. - पाठ 4 अभ्यास।

पाठ 4 का अभ्यास पाँच भागों में करें।

1 | सं ध सं ध | 2-3 मि. अभ्यास।

2 | नि म नि म | 2-3 मि. अभ्यास।

3 | सं ध सं ध | नि म नि म | 4-5 मि. अभ्यास।

4 | स री ग प | स री ग प | 4-5 मि. अभ्यास।

5 शेष समय, पूरे पाठ का अभ्यास। पाठ 4 प्रत्येक का अधिक समय अभ्यास करने से उंगलियों के चलन में सफाई तथा स्वरों की स्पष्ट कल्पना प्राप्त होती है।

कालांश-9 * पाठ 1, 2, 3 प्रत्येक पाठ 5 मि. अभ्यास। * 15 मि. पाठ 4 अभ्यास।

* 15 मि. पाठ 5 अभ्यास।

कालांश-10 * 10 मि. पाठ 1, 2, 3 अभ्यास। * 15 मि. पाठ 4 अभ्यास।

* 5 मि. पाठ 5 अभ्यास। * 15 मि. पाठ 6 अभ्यास।

पाठ 6 का अभ्यास अधिक समय करने से अपेक्षित स्वर पाने के लिए उंगलियों द्वारा कौनसे स्वररंध्र खुले या बंद रखना है इसकी कल्पना और भी अधिक स्पष्ट होती है।

5 || स री ग म | प ध नि सं- | सं नि ध प | म ग री सं- ||

- 6 || स s- स री | स ग स म | स प स ध | स नि स सं |
 | सं s- सं नि | सं ध सं प | सं म सं ग | सं री सं स ||
- 7 || स री ग s- | री ग म s- | ग म प s- | म प ध s- |
 | प ध नि s- | ध नि सं s- | सं नि ध s- | नि ध प s- |
 | ध प म s- | प म ग s- | म ग री s- | ग री स s- ||
- 8 || स री ग m- | री ग म p- | ग म प dh- | म प ध ni- | प ध नि sं- |
 | सं नि ध p- | नि ध प m- | ध प म g- | प म ग ri- | म ग री s- ||
- 9 || सरी सरी | ग g- | रीग रीग | म m- | गम गम | प p- |
 | मप मप | ध dh- | पध पध | नि ni- | धनि धनि | सं s- | |
 | संनि संनि | ध dh- | निध निध | प p- | धप धप | म m- |
 | पम पम | ग g- | मग मग | री ri- | गरी गरी | स s- ||

- कालांश-11 * 5 मि. पाठ 1, 2, 3, 5 अभ्यास। * 5 मि. पाठ 4 अभ्यास।
 * 15 मि. पाठ 6 अभ्यास। * 20 मि. पाठ 7 अभ्यास।
 कालांश-12 * 5 मि. पाठ 1, 2, 3, 5 अभ्यास। * 5 मि. पाठ 4 अभ्यास।
 * 10 मि. पाठ 6 अभ्यास। * 15 मि. पाठ 7 अभ्यास।
 * 10 मि. पाठ 8 अभ्यास।
 कालांश-13 * 5 मि. पाठ 4,6 अभ्यास। * 10 मि. पाठ 7 अभ्यास।
 * 10 मि. पाठ 8 अभ्यास। * 20 मि. पाठ 9 अभ्यास।
 कालांश-14 * 5 मि. पाठ 4, 6 अभ्यास। * 10 मि. पाठ 7 अभ्यास।
 * 30 मि. भूप आरोह-अवरोह अभ्यास। स, री, ग, प, ध, सं तथा सं, ध, प, ग, री, सा
 कालांश-15 * 10 मि. पाठ 4, 6, 7, 8, 9 अभ्यास। * 5 मि. भूप आरोह-अवरोह अभ्यास।
 * 30 मि. भूप प्रथम चरण अभ्यास।
 कालांश-16 * 5 मि. 4, 6, 7, 8, 9 अभ्यास। * 40 मि. भूप रचना अभ्यास।

रचना अभ्यास

रचना अभ्यास के पहले, सभी प्रथमिक पाठों का संचलन में वादन करने की क्षमता प्राप्त करनी चाहिए।

रचना का एक-एक भाग मुखोद्गत करते हुए क्रमशः अभ्यास करना है। एक भाग का वादन अच्छा आने के बाद, अगला भाग शुरू करें। प्रारंभ में अभ्यास मंदगति तथा क्रमशः संचलन गति में हो। प्राथमिक पाठ की सूचनाएँ यहां भी लागू हैं। एक चरण का अभ्यास होने के उपरांत आनक एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास स्थिर स्थिति तथा संचलन में किया जाए।

रचना भूप - अभ्यासक्रम

चरण-एक

1 आरोह - स री ग प ध सं अवरोह - सं ध प ग री स

2 सं ध प ग री स

3

ध सं

ध प

ग री

स

चरण का पहला एवं तीसरा भाग।

4 | ध सरी |

5

ग री

ग प

6 | ध सरी |

ग री

ग प

चरण का दूसरा भाग।

7 | ध सं ध प |

ग री

स

ध

सरी

ग री

ग प

प्रथम चरणार्ध।

8 प्रथम चरणार्ध के अंतिम गण में केवल ग का वादन करने से इसका अंतिम चरणार्ध प्राप्त होता है।

| धसं धप | गरी स | धृ सरी | ग S- |

9 || धसं धप | गरी स | धृ सरी | गरी गप |

| धसं धप | गरी स | धृ सरी | ग S- :||

पहले दोनों चरणार्धों का अल्प काल अलग अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से, पहले चरण का वादन पूरा होगा। इसके बाद आनक एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

चरण-दो

1 | गरी गप | 2 | धप ध |

3 | गरी गप | धप ध | चरण का पहला भाग।

4 | गप धसं | धप ग | चरण का दूसरा भाग।

5 | गरी गप | धप ध | गप धसं | धप ग |

प्रथम चरणार्ध।

6		<u>सं</u>	<u>धप</u>		<u>गरी</u>	<u>स</u>		चरण का तीसरा भाग।
7		<u>धुप</u>	<u>गरी</u>		<u>स</u>	<u>S-</u>		चरण का चौथा भाग। ध्यान रहे कि यहाँ धु मंद्र सप्तक का है।
8		<u>सं</u>	<u>धप</u>		<u>गरी</u>	<u>स</u>		<u>धुप</u> <u>गरी</u> <u>स</u> <u>S-</u> अंतिम चरणार्ध।
9		<u>गरी</u>	<u>गप</u>		<u>धप</u>	<u>ध</u>		<u>गप</u> <u>धसं</u> <u>धप</u> <u>ग</u>
		<u>सं</u>	<u>धप</u>		<u>गरी</u>	<u>स</u>		<u>धुप</u> <u>गरी</u> <u>स</u> <u>S-</u> :

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से, दूसरे चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद, आनक एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

चरण-तीन	1		<u>संध</u>	<u>सं</u>		<u>पध</u>	<u>ग</u>		चरण का पहला और तीसरा भाग।
2	<u>रीप</u>	3	<u>गध</u>	4		<u>रीप</u>	<u>गध</u>		5 <u>पसं</u>
6	<u>धरीं</u>	7		<u>पसं</u>	<u>धरीं</u>				
8		<u>रीप</u>	<u>गध</u>		<u>पसं</u>	<u>धरीं</u>		चरण का दूसरा भाग।	

9		<u>संघ</u>	सं		<u>पध</u>	ग		<u>रीप</u>	<u>गध</u>		<u>पसं</u>	<u>धरीं</u>	
													प्रथम चरणार्ध।
10		<u>धप</u>	<u>गरी</u>		स	<u>S -</u>		चरण का चौथा भाग।					
11		<u>संघ</u>	सं		<u>पध</u>	ग		<u>धप</u>	<u>गरी</u>		स	<u>S -</u>	
													अंतिम चरणार्ध।
12		<u>संघ</u>	सं		<u>पध</u>	ग		<u>रीप</u>	<u>गध</u>		<u>पसं</u>	<u>धरीं</u>	
		<u>संघ</u>	सं		<u>पध</u>	ग		<u>धप</u>	<u>गरी</u>		स	<u>S -</u>	:

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से, तीसरे चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद पणव तथा आनक के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

रचना भूप

रणन के बाद रचना वादन करें। प्रत्येक चरण का वादन दो-दो बार हो।

वंशी

भूप

केरवा - १२०

॥ ॐ ॥	<u>धसं</u>	<u>धप</u>		<u>गरी</u>	स		ध	<u>सरी</u>		<u>गरी</u>	<u>गप</u>	
	<u>धसं</u>	<u>धप</u>		<u>गरी</u>	स		ध	<u>सरी</u>		ग	<u>S -</u> ::	
॥	<u>गरी</u>	<u>गप</u>		<u>धप</u>	ध		<u>गप</u>	<u>धसं</u>		<u>धप</u>	ग	
	सं	<u>धप</u>		<u>गरी</u>	स		<u>धप</u>	<u>गरी</u>		स	<u>S -</u> ::	
॥	<u>संध</u>	सं		<u>पध</u>	ग		<u>रीप</u>	<u>गध</u>		<u>पसं</u>	<u>धरी</u>	
	<u>संध</u>	सं		<u>पध</u>	ग		<u>धप</u>	<u>गरी</u>		स	<u>S -</u> ::	

ध्वजारोपणम् - अभ्यासक्रम

आरोह - स ग म ध नि सं अवरोह - सं ध म ग री स

चरण-एक

1 | सं S सं | ध S ध | प्रथम चरणार्ध।

2

मग

3

मग

ग का निरंतर वादन। (बिना जिह्वाघात)

4

| ग S मग |

5 | ग S मग | 6 | री S स |
 7 | ग S मग | री S स | अंतिम चरणार्ध।
 8 || सं S सं | ध S ध | ग S मग | री S स :||
 पहला चरण पूर्ण।

चरण-दो 1 | णि S ग | म ध ध | प्रथम चरणार्ध।
 2 | ग ग मग | री S स | अंतिम चरणार्ध।
 3 || णि S ग | म ध ध | ग ग मग | री S स :||
 दूसरा चरण पूर्ण।

चरण-तीन 1 | णि S ग | म ध ध |
 2 | ग म ध | नि सं सं |
 3 | णि S ग | म ध ध | ग म ध | नि सं सं |
 4 | गं S गं | सं S सं | गं S गं | नि सं सं |
 सं S नि |
 नि विकृत स्वर।

5		ध	S	ग		म	ध	नि		
6		ध	S	ग		म	ध	नि		नि - निरंतर वादन। (बिना जिह्वाघात के वादन)
7		गं	S	गं		सं	S	सं		गं S गं
		सं	S	नि		ध	S	ग		म ध नि
8		निः	S	ग		म	ध	ध		ग म ध नि सं सं
		गं	S	गं		सं	S	सं		गं S गं सं S नि
		ध	S	ग		म	ध	नि		तीसरा चरण पूर्ण।
चरण-चार				1		सं	S	S		S - -
2		सं	S	सं		ध	S	ध		ग S <u>मग</u> री S स :
		सं	S	S		S	-	-		चौथा चरण पूर्ण।

ध्वजारोपणम्

ध्वजारोपणम् का संस्कृत श्लोक है। उसे मुखोद्गत करें। ध्वजारोपणम् के समय कुछ स्वयंसेवकों द्वारा श्लोक-गायन तथा आनक-पणव वादन के साथ-साथ ध्वजारोपणम् का वंशी वादन कर सकते हैं।

वंशी

ध्वजारोपणम् (रागेश्री)

दादरा - १२०

॥ ॐ ॥	ओं	न	मो	स्तु	ते	ध्वऽ	जा	य
॥	सं	सं	ध	ध	ग	मग	री	सः॥
॥	स	ल	धु	व	ज	न	ता	य
॥	निः	ग	म	ध	ग	ग	री	सः॥
॥	वि	व	स	हि	वि	म	च	रि
॥	निः	ग	म	ध	ग	म	नि	सं
॥	बो	ध	का	य	मं	ग	ला	य
॥	गं	गं	सं	सं	गं	गं	सं	नि
॥	ते	स	त	तं	ओं	न	मो	स्तु
॥	ध	ग	म	ध	सं	सं	ध	ध
॥	ते	ध्वऽ	जा	य	ओं			
॥	ग	मग	री	स	सं	स	स	॥

रचना केदार - अभ्यासक्रम

चरण-1	आरोह - स री स म प ध प सं,	अवरोह - सं नि ध प म प ध नि ध प म री स
1	स <u>मग</u>	2 <u>पम</u> 3 <u>धप</u>
4	<u>पम</u> <u>धप</u>	5 स <u>मग</u> <u>पम</u> <u>धप</u>
चरण का पहला और तीसरा भाग।		
6	सं <u>धप</u>	7 <u>मप</u> म
8	सं <u>धप</u> <u>मप</u> म	चरण का दूसरा भाग।
9	स <u>मग</u> <u>पम</u> <u>धप</u>	सं <u>धप</u> <u>मप</u> म
प्रथम चरणार्ध।		
10	म री स <u>s -</u>	चरण का चौथा भाग।
11	स <u>मग</u> <u>पम</u> <u>धप</u>	म री स <u>s -</u>
अंतिम चरणार्ध।		
12	स <u>मग</u> <u>पम</u> <u>धप</u>	सं <u>धप</u> <u>मप</u> म
	स <u>मग</u> <u>पम</u> <u>धप</u>	म री स <u>s -</u> :

पहले दोनों चरणार्थों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से, पहले चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद आनक एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

चरण-2	1		प	<u>मप</u>		2		<u>धनि</u>	<u>धप</u>	
3		प	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>	चरण का पहला और तीसरा भाग।			
4		<u>मप</u>	<u>धप</u>		5		म	<u>रीस</u>	चरण का दूसरा भाग।	
6		<u>मप</u>	<u>धप</u>		म	<u>रीस</u>				
7		प	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>	<u>मप</u>	<u>धप</u>		म <u>रीस</u>
										प्रथम चरणार्थ।
8		<u>मप</u>	<u>धनि</u>		सं	<u>S-</u>	चरण का चौथा भाग।			
9		प	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>	<u>मप</u>	<u>धनि</u>		सं <u>S-</u>
										अंतिम चरणार्थ।
10		प	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>	<u>मप</u>	<u>धप</u>		म <u>रीस</u>
		प	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>	<u>मप</u>	<u>धनि</u>		सं <u>S-</u> :

पहले दोनों चरणार्थों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से, दूसरे चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद आनक एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

चरण-3

	1		<u>संनि</u>	<u>रींसं</u>		2		<u>धप</u> <u>मप</u>	
3		<u>संनि</u>	<u>रींसं</u>		<u>धप</u>	<u>मप</u>		चरण का पहला और तीसरा भाग।	
4		<u>धनि</u>	<u>धप</u>		5		<u>मपधप</u>	म	
6		<u>मपधप</u>	म		7		<u>धनि</u>	<u>धप</u>	
							<u>मपधप</u>	म	
									चरण का दूसरा भाग।
8		<u>संनि</u>	<u>रींसं</u>		<u>धप</u>	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>
							<u>मपधप</u>	म	
									प्रथम चरणार्थ।
9		म	<u>रीस</u>		<u>निरी</u>	स		चरण का चौथा भाग।	
10		<u>संनि</u>	<u>रींसं</u>		<u>धप</u>	<u>मप</u>		म	<u>रीस</u>
							<u>निरी</u>	स	
									अंतिम चरणार्थ।
11		<u>संनि</u>	<u>रींसं</u>		<u>धप</u>	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>
							<u>मपधप</u>	म	
		<u>संनि</u>	<u>रींसं</u>		<u>धप</u>	<u>मप</u>		म	<u>रीस</u>
							<u>निरी</u>	स	

पहले दोनों चरणार्थों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से, तीसरे चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद आनक एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

रचना केदार

रणन के बाद रचना वादन करें। प्रत्येक चरण का वादन दो-दो बार हो।

वंशी

केदार

केरवा - १२०

॥ ॐ ॥	स	<u>मग</u>		<u>पम</u>	<u>धप</u>		सं	<u>धप</u>		<u>मप</u>	म	
	स	<u>मग</u>		<u>पम</u>	<u>धप</u>		म	री		स	<u>S -</u>	॥
॥	प	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>		<u>मप</u>	<u>धप</u>		म	<u>रीस</u>	
	प	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	धप		<u>मप</u>	<u>धनि</u>		सं	<u>S -</u>	॥
॥	<u>संनि</u>	<u>रीसं</u>		<u>धप</u>	<u>मप</u>		<u>धनि</u>	<u>धप</u>		<u>मपधप</u>	म	
	<u>संनि</u>	<u>रीसं</u>		<u>धप</u>	<u>मप</u>		म	<u>रीस</u>		<u>निरी</u>	स	॥

भूप, ध्वजारोपणम्, केदार रचना के बाद केरवा-खेमटा ताल के वंशी प्रगत पाठों का अभ्यास करें। इसके पश्चात् रचना पुस्तक में दिये क्रम के अनुसार आगे की रचनाओं का अभ्यास कर सकते हैं। प्रगत रचनाओं के साथ-साथ मंद रचनाओं का अभ्यास भी हो।

वंशी प्रगत पाठ

- 1 || सs- | सरीसs- | सरीगरीसs- | सरीगमगरीसs- | सरीगमपमगरीसs- |
 | सरीगमपधपमगरीसs- | सरीगमपधनिधपमगरीसs- | | |
 | सरीगमपधनिसंनिधपमगरीसs- | संs- | संनिs- | संनिधनिसंs- |
 | संनिधपधनिसंs- | संनिधपमपधनिसंs- | संनिधपमगमपधनिसंs- |
 | संनिधपमगरीगमपधनिसंs- | संनिधपमगरीसरीगमपधनिसंs- ||
- 2 || सग रीम | गप मध | पनि धसं | निरीं सं- |
 | रींनि संध | निप धम | पग मरी | गस नि- ||

- 3 || स सरीगम | री रीगमप | ग गमपध | म मपधनि | प पधनिसं |
 | सं संनिधप | नि निधपम | ध धपमग | प पमगरी | म मगरीस ||
- 4 || सस रीsरीरी | गग ममsम | पप धsध | निनि संसंसs |
 | संसं निसनिनि | धध पपsप | मम गsग | रीरी सससs ||
- 5 || ससस , रीsरी | गगग , मsम | पपप , धsध | निनिनि , संs - |
 | संसंसं , निसनि | धधध , पsप | ममम , गsग | रीरीरी , सs - |
- 6 || सsस , सरीग | रीsरी , रीगम | गsग , गमप | मsम , मपध |
 | पsप , पधनि | धsध , धनिसं | निसनि , निसंरीं | गंस - , गंस - | |
 | गंसगं , गंरींसं | रींसरीं , रींसंनि | संsसं , संनिध | निसनि , निधप |
 | धsध , धपम | पsप , पमग | मsम , मगरी | सs - , सs - ||

7 || सरी, सरीग | रीग, रीगम | गम, गमप | मप , मपध |
| पध, पधनि | धनि, धनिसं | संनि , संनिध | निध, निधप |
| धप, धपम | पम, पमग | मग, मगरी | गरी, गरीस ||

8 || सरीग, सरी, गम | रीगम, रीग, मप | गमप, गम, पध |
मपध, मप, धनि	पधनि, पध, निसं	संनिध, संनि, धप	
निधप, निध, पम	धपम, धप, मग	पमग, पम, गरी	
मगरी, मग, रीस	गरीस, गरी, सनि	रीसनि, रीस, निप	

आगे की रचनाओं का अभ्यास

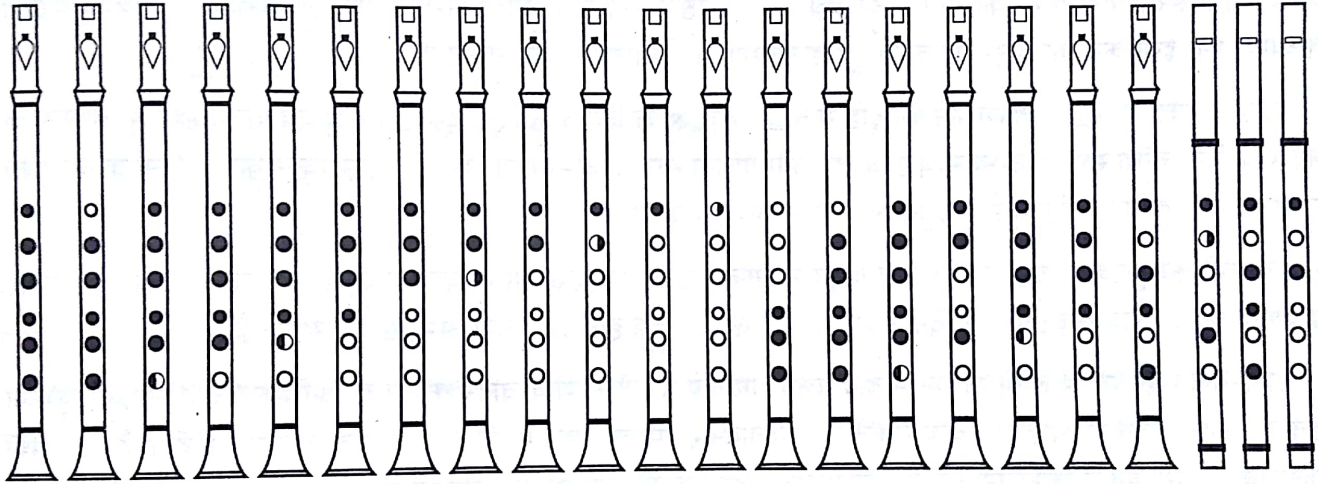
यहाँ उपरोक्त रचनाओं के वादन अभ्यास क्रम की जानकारी दी गयी है । आगे की रचनाओं का अभ्यास करते समय इसी क्रम का अनुसरण कर सकते हैं ।

साधारणतः एक चरण के चार भाग बनाते हुए, पहले भाग के प्रथम एवं दूसरे गण का अलग-अलग अभ्यास करने के पश्चात् इन दोनों भागों को जोड़कर बनने वाले आधे चरण का अभ्यास करना । इसी प्रकार शेष आधे चरण का अभ्यास होने के उपरान्त पूरे चरण के वादन का अभ्यास करना । सामान्यतः चरण का पहला और तीसरा भाग समान होता है । लेकिन चौथा भाग दूसरे भाग से थोड़ा भिन्न होता है । कठिन भाग का अधिक अभ्यास करना चाहिए ।

रचनाओं का अभ्यास करते समय रचना-पुस्तक सामने रखकर लिपि देखते हुए अभ्यास करना चाहिए । रचना लिपि बार-बार देखने से उसके प्रत्येक भाग का चित्र हमारे मनः पटल पर स्पष्टतः अंकित होगा । इससे अपेक्षानुसार स्वरों का वादन, यति, अवग्रह इत्यादि सही ढंग से आ रहे हैं या नहीं इसका अवलोकन कर सकते हैं । इस प्रकार के अवलोकनयुक्त वादन से रचना की परिशुद्धता रखने में आसानी होती है । रचना-पुस्तक का उपयोग केवल अभ्यास के समय ही करना चाहिए । संचलन, समारंभ आदि कार्यक्रमों में रचना-पुस्तक का उपयोग न करें ।

वंशी स्वर सारिणी

स शी री ग ग म म प ध ध नि नि सं श्रिं श्रिं गं गं मं गं गं मं



स शी री ग म प ध नि

पीतल की वंशी

शंख शिक्षण विधि

प्रति दिन 45 मिनट के अनुसार 20 दिन सतत् अभ्यास करने पर प्रायः एक रचना का विशुद्ध रूप से वादन करने की क्षमता आ सकेगी। 20 दिन एक साथ अभ्यास करना असंभव हो, तो पहले न्यूनतम 6-7 दिन अभ्यास करते हुए शिक्षार्थियों को उसी का स्वाध्याय एक सप्ताह तक करने की सुविधा उपलब्ध कराना। पश्चात् 6-7 दिन अगला अभ्यास तथा एक सप्ताह का शिक्षार्थियों द्वारा स्वाध्याय, पुनः इसी क्रम का अनुसरण करते हुए तीन चरणों में अभ्यास पूरा कर सकते हैं।

शंख के स्वरों पर सही नियंत्रण पाने की दृष्टि से तीसरा स्वर स के लिए 5-6 दिन, दूसरा स्वर प एवं पहला स्वर सृ अभ्यास के लिए 3-4 दिन, चौथा स्वर ग अभ्यासार्थ 3-4 दिन और पाँचवा स्वर च अभ्यासार्थ 3-4 दिन इस प्रकार का 16 दिनों के कालांशों का पाठ्यक्रम यहाँ प्रस्तुत किया है। उसके बाद रचना अभ्यास करना।

शिक्षार्थी की गुणवत्ता, ग्रहणशक्ति तथा वादन में प्रगति देखकर पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करते हुए, उसी प्रकार नए नए प्रयोगों का अवलंब कर, 10-12 दिन प्राथमिक पाठों का अभ्यास होने पर, रचना अभ्यास कर सकते हैं।

शंख-वादन के बारे में लोगों के मन में कई गलत धारणाएँ हैं। जैसे, शंख-वादन कठिन है; अधिक ताकत लगाकर फूँकना पड़ता है; केवल दृढ़काय व्यक्ति ही बजा सकते हैं; शंखवादन से सिरदर्द, सीने में दर्द, दाँत का दर्द, गले में कष्ट होता है। इन सभी काल्पनिक भय को मन से निकालना चाहिए। साधारणतः पंद्रह वर्ष की आयु के बाद कोई भी शंखवादन कर सकता है। जिस प्रकार शारीरिक व्यायाम के समय लंगोट पहनते हैं, उसी तरह शंखवादक के लिये भी वादन के समय इसे पहनना अनिवार्य है।

शारीरिक दृष्टि से अस्वस्थ व्यक्ति को शंख वादन नहीं करना चाहिये।

कालांश-1 * 15 मि. प्राथमिक परिचय

- (अ) वाद्य का सामान्य परिचय तथा रख रखाव।
- (आ) शंख वादन के बारे में संभाव्य काल्पनिक भय को निकालना।
- (इ) फूँकने की विधा।
- (ई) होंठों पर शंख के बजाय उंगलियां रखकर फूँकने का अभ्यास।
- (उ) वाद्य पकड़ने की पद्धति।
- (ऊ) अभ्यास के पहले और बाद में वाद्य को जल से धोना।

* 30 मि. स्वर का अभ्यास

स्वर वादन अभ्यास प्रारंभ करने से पहले केवल फूँकने का अभ्यास करें। होंठों को थोड़ा अंदर मोड़कर एक दूसरे पर सख्ती से चिपकाए रखना। हाथ की दो उंगलियों में थोड़ा सा अंतर रखते हुए उन्हें होंठों के मध्य दबाए रखना। नाभि से आरंभ कर बिना किसी रुकावट या चढ़ाव-उतार के सहज रूप से जोर से फूँकते हुए होंठों से 'फुर्रर्रर्र' इस शब्द के साथ हवा बाहर छोड़नी चाहिये।

हवा बाहर फूँकते समय गालों को फुलाकर, गले तथा श्वांस को खींचकर, चेहरे पर त्रासिकता लाकर, शरीर में कहीं पर भी सख्ती लाते हुए वादन नहीं करना चाहिये। अर्थात् सरलता तथा सहजता से फूँक लगानी चाहिए।

* आरंभ में 5-6 मिनट होंठों पर उंगलियां रखते हुये फूँकने का अभ्यास।

* बाद में शंख होंठों पर थोड़ा दबाए रखते हुए उपरोक्त पद्धति से फूँकने का अभ्यास।

हवा केवल मुखाग्र से ही निकले इसका विशेष ध्यान रखना चाहिये। प्रारंभ में किसी स्वर विशेष का आग्रह न रखते हुए यथासंभव अधिकतम ऊँचाई में स्वर निकालने का अभ्यास। बीच-बीच में आवश्यकतानुसार अल्प विराम लेते हुये अभ्यास करें।

कालांश-2

- * 3-4 मि. शंख के बजाय होठों पर उंगालियां रखते हुए फूँकने का अभ्यास।
- * 15 मि. किसी स्वर-विशेष का आग्रह न रखते हुए अधिकतम ऊँचाई में स्वर निकालने का अभ्यास।
- * शेष समय, तीसरा स्वर स निकालने का विशेष आग्रह पूर्वक अभ्यास। यह एक सहज स्वर है। इसके ऊपर दो स्वर एवं नीचे दो स्वर है। आरंभ में ही तीसरा स्वर स भली भांति निकाल सकें तो शेष स्वर प्राप्त करना सुलभ होगा।

कालांश-3

- * 15 मि. तीसरा स्वर स का अभ्यास
- * शेष समय, 4-5 सेकंड स के अविरत् वादन का अभ्यास। बीच-बीच में अल्प विराम लेते हुए यही अभ्यास जारी रखना शंख वादन अभ्यास के इस प्रारंभिक अवस्था में कभी-कभी कुछ लोगों को सिर दर्द, सीने में जलन, गले में दर्द आदि के लक्षण दिखाई दे सकते हैं। इस कारण इन मामूली लक्षणों से भयभीत न हो कर अपना अभ्यास उसी प्रकार जारी रखना चाहिये। पर्याप्त अभ्यास होने पर इन सब लक्षणों का अपने आप निवारण होगा। सहज और सरलता से शंख वादन का अभ्यास ही इसका एकमेव उपाय है।

स्वराभ्यास के समय ध्यान देने योग्य बिंदु :-

- * वाद्य पकड़ने की पद्धति।
- * किसी उतार-चढ़ाव के बिना निश्चित वेग से फूँकना।
- * होठों के बाजू से फिसलने के बजाय, फूँक पूरी, सीधी मुखाग्र में ही जाये इसका आग्रह।
- * बड़ी कठिनाई से, गालों का गुब्बारा करके, नसों को फुलाते हुए, मुख पर त्रासिकता लाते हुए फूँक नहीं भरना।
- * शरीर में कहीं पर भी विकृति लाये बिना सहजता से वादन।

इन सभी बातों को आरंभ में ही, एक ही बार ठीक करने का आग्रह न करते हुए अभ्यास के दौरान धीरे-धीरे लागू करने की दृष्टि रखें।

* प्रारंभ में स्वरों का 4-5 सेकंड दीर्घ-वादन करें। क्रमशः शिक्षार्थियों की वादन क्षमता के अनुसार दीर्घ-वादन के समय में वृद्धि करते जाना। विराम के समय, स्वरों का मौखिक उच्चारण करते रहना।

कालांश-4 * 15 मि. स का अभ्यास।

* 20 मि. स का 8-10 सेकंड दीर्घ-वादन अभ्यास।

* 10 मि. स का सांतर वादन अभ्यास।

कालांश-5 * 10 मि. स का 8-10 सेकंड दीर्घ-वादन अभ्यास।

* 25 मि. स के प्राथमिक पाठ 1-2-3 में से प्रत्येक का 6-7 मि. अभ्यास।

* 5 मि. शेष समय दूसरा स्वर पृ का अभ्यास।

शंख प्राथमिक पाठ - स (तीसरा) स्वर

1	॥	स	स		स	स-	॥
2	॥	स	स-		स	स-	॥
3	॥	स	स		स	स-	॥

4	॥	सस	सस		सस	स-	
5	॥	सससस	स-		सससस	स-	॥
6	॥	सससस	सससस		स	स-	॥

कालांश-6 * 5 मि. स का 8-10 सेकंड दीर्घ-वादन अभ्यास।

* स के प्राथमिक पाठ 1-2-3 में से प्रत्येक का 5 मि. अभ्यास।

* स के प्राथमिक पाठ 4-5-6 में से प्रत्येक एक का 6-7 मि. अभ्यास।

* शेष समय, दूसरा स्वर ष का अभ्यास।

प्राथमिक पाठ अभ्यास

पणव अथवा अन्य ताल माध्यम के अनुसार वादन। अल्प विराम के समय में ताल के साथ पाठ मुखोद्गत करना। प्रारंभ में कुछ समय मंद गति में, अधिक समय संचलन गति में अभ्यास करें। शुरु में स्थिर स्थिति में एवं धीरे धीरे मितकाल तथा संचलन में अभ्यास किया जाए। एक पाठ का अच्छी तरह से वादन करने की क्षमता आने के बाद ही अगला पाठ शुरू करें। यदि अनुकूल हो, तो आनक-पणव के साथ स्थिर स्थिति एवं संचलन में पाठों का सांघिक वादन करना।

शंख प्राथमिक पाठ - ष (दूसरा) स्वर

1	॥	ष	s		s	<u>s-</u>	॥
2	॥	ष	<u>s-</u>		ष	<u>s-</u>	॥
3	॥	ष	ष		ष	<u>ष-</u>	॥

4	॥	<u>षष</u>	<u>षष</u>		<u>षष</u>	<u>ष-</u>	॥
5	॥	<u>षषषष</u>	<u>ष-</u>		<u>षषषष</u>	<u>ष-</u>	॥
6	॥	<u>षषषष</u>	<u>षषषष</u>		ष	<u>s-</u>	॥

शंख प्राथमिक पाठ - स (पहला) स्वर

1	॥	स	S		S	S-	॥
2	॥	स	S-		स	S-	॥
3	॥	स	स		स	स-	॥

4	॥	सस	सस		सस	स-	॥
5	॥	सससस	स-		सससस	स-	॥
6	॥	सससस	सससस		स	S-	॥

शंख प्राथमिक पाठ - स प स स्वर

1	॥	सस	सस		सस	स-	
		पप	पप		पप	प-	
		सस	सस		सस	स-	॥
2	॥	सस	सससस		सस	स-	
		पप	पपपप		पप	प-	
		सस	सससस		सस	स-	॥

3	॥	सस	सससस		सस	स-	
		पप	पपपप		पप	प-	
		सस	सससस		सस	स-	॥
4	॥	सस	सससस		सस	स-	
		पप	पपपप		पप	प-	
		सस	सससस		सस	स-	॥

5 || सस ससस s | सस स- |
 | पुपु पुपुपु s | पुपु पु- |
 | सुसु सुसुसु s | सुसु सु- ||

6 || सस ससस | सस स- |
 | पुपु पुपुपु | पुपु पु- |
 | सुसु सुसुसु | सुसु सु- ||

7 || स s- | पु s- |

| स s- | पु s- | सु s- ||

8 || सुपु सुपु | पु s- |

| सपु सपु | पु s- |

स s- |

सु s- ||

पुस पुस | स s- |

पुसु पुसु | सु s- ||

कालांश-7 * 15 मि. स के सभी पाठों का अभ्यास।

* शेष समय, पहला स्वर सु का अभ्यास।

कालांश-8 * 10 मि. स के सभी पाठों का अभ्यास।

* 10 मि. सु के सभी पाठों का अभ्यास।

कालांश-9 * 5 मि. स के सभी पाठों का अभ्यास।

* 20 मि. पु के सभी पाठों का अभ्यास।

* 10 मि. पु के सभी पाठों का अभ्यास।

* शेष समय स पु सु स्वरों से युक्त पाठ 1-2-3 का अभ्यास।

* 5 मि. पु के सभी पाठों का अभ्यास।

* 5 मि. सु के सभी पाठों का अभ्यास।

* शेष समय, स प् सु स्वरो से युक्त पाठ 1, 2, 3, 4, 5, 6 में से प्रत्येक का 2-2 मि. अभ्यास, तथा पाठ 7-8 में से प्रत्येक का 5-5 मि. अभ्यास।

कालांश-10 * कालांश 9 के अनुसार अभ्यास। अंतिम 4-5 मि. चौथा स्वर ग निकालने का प्रयत्न।

कालांश-11 * 15 मि. ग स्वर निकालने का प्रयत्न। स स्वर के तीसरे पाठ का वादन करते हुए, फूँकने का वेग थोड़ा सा अधिक करने पर ग स्वर प्राप्त होने में अनुकूलता होगी।

* 15 मि. ग के सभी पाठों का अभ्यास। * शेष समय, स प् सु स्वरो से युक्त सभी पाठों का अभ्यास।

शंख प्राथमिक पाठ - ग (चौथा) स्वर

1	॥	ग	ग		ग	ग-	॥
2	॥	गग	ग-		गग	ग-	॥
3	॥	गग	गग		गग	ग-	॥

4	॥	गगगग	गग		ग	स-	॥
5	॥	गसगग	गग		ग	स-	॥
6	॥	गससग	गग		ग	स-	॥

कालांश-12 और 13

- * 10 मि. ग का अभ्यास। खेल के अवधि में उत्साह प्रदान करने के लिए शंख का तीव्र गति से सांतर में वादन करते हुए स्वर को अधिकतम ऊँचाई तक ले जाने के प्रयासों से ग स्वर प्राप्त हो सकेगा।
- * 15 मि. ग के सभी पाठों का अभ्यास।
- * शेष समय, ग, स, प, सृ स्वरों से युक्त सभी पाठों में से प्रत्येक का 4-5 मि. अभ्यास।

शंख प्राथमिक पाठ - सृ प, स ग स्वर

1		ग	ग		ग	<u>S-</u>	
		स	स		स	<u>S-</u>	
		प	प		प	<u>S-</u>	
		सृ	सृ		सृ	<u>S-</u>	
2		<u>गग</u>	<u>गग</u>		ग	<u>S-</u>	
		<u>सस</u>	<u>सस</u>		स	<u>S-</u>	
		<u>पप</u>	<u>पप</u>		प	<u>S-</u>	
		<u>सृसृ</u>	<u>सृसृ</u>		सृ	<u>S-</u>	

3		सृ	<u>S-</u>		प	<u>S-</u>	
		स	<u>S-</u>		ग	<u>S-</u>	
		ग	<u>S-</u>		स	<u>S-</u>	
		प	<u>S-</u>		सृ	<u>S-</u>	
4		सृ	<u>सृसृ</u>		<u>पपससप</u>	<u>प-</u>	
		स	<u>सस</u>		<u>गससग</u>	<u>ग-</u>	
		ग	<u>गग</u>		<u>सससस</u>	<u>स-</u>	
		प	<u>पप</u>		<u>सृसससृ</u>	<u>स-</u>	

- कालांश-14 * 5 मि. ग के सभी पाठों का अभ्यास । * 10 मि. ग, स, प, सृ स्वरों से युक्त सभी पाठों का अभ्यास ।
 * 10 मि. स्वरों का सांतर में क्रम से आरोह करते हुए स्वर प निकालने का प्रयत्न करें ।
 * शेष समय, रचना किरण प्रस्ताव-पद का अभ्यास ।

- कालांश-15 * 10 मि. पाँचवा स्वर प का अभ्यास ।
 * 5 मि. ग के सभी पाठों का अभ्यास ।
 * 5 मि. ग, स, प, सृ के सभी पाठों का अभ्यास ।
 * शेष समय, रचना किरण अभ्यास ।

शंख प्राथमिक पाठ - प (पाँचवाँ) स्वर

1	॥	प	<u>s-</u>		प	<u>s-</u>	॥
2	॥	प	प		प	<u>s-</u>	॥
3	॥	<u>पप</u>	प		प	<u>s-</u>	॥

4	॥	<u>पप</u>	<u>पप</u>		प	<u>s-</u>	॥
5	॥	प	<u>पपसप</u>		प	<u>s-</u>	॥
6	॥	प	<u>पपपस</u>		प	<u>s-</u>	॥

शंख प्राथमिक पाठ - सृ पृ स ग प स्वर

1	॥	सृ	<u>s-</u>		पृ	<u>s-</u>		स	<u>s-</u>		ग	<u>s-</u>		प	<u>s-</u>				
					प	<u>s-</u>		ग	<u>s-</u>		स	<u>s-</u>		पृ	<u>s-</u>		सृ	<u>s-</u>	॥

2 || सुसु सु- | पुपु पु- | सस स- | गग ग- | प स- |
 | पप प- | गग ग- | सस स- | पुपु पु- | सु स- ||

3 || सुपु सुपु | स स- | सग सग | प स- |
 | पग पग | स स- | सपु सपु | सु स- ||

4 || सु पुपु | सससस स | प सस |
गगगग ग	स गग	पपपप प	
प गग	सससस स	ग सस	
पुपुपुपु पु	स पुपु	सुसुसुसु सु	

कालांश-16 * 10 मि. प तथा उसके सभी पाठों का अभ्यास ।

* 15 मि. पाँचों स्वरों से युक्त पाठों का अभ्यास ।

* शेष समय, रचना किरण अभ्यास ।

रचना अभ्यास

साधारणतः ग, स, ष, सृ स्वरों का अच्छी तरह से अभ्यास होने पर, विशेषतः ग स्वर का वादन भली भाँति आने के बाद रचना किरण का अभ्यास प्रारंभ कर सकते हैं। किन्तु पाँचों स्वरों का पूरा अभ्यास होने पर, रचना किरण अभ्यास शुरू किया जाए, तो रचना वादन में अधिक शुद्धता लाने में सहायक होता है।

रचना का एक-एक भाग मुखोद्गत करते हुए क्रमशः अभ्यास करना है। एक भाग का वादन अच्छा आने के बाद, अगला भाग शुरू करें। प्रारंभ में अभ्यास मंदगति तथा क्रमशः संचलन गति में हो। प्राथमिक पाठ की सूचनाएँ यहाँ भी लागू हैं। एक चरण का अभ्यास होने के उपरांत आनक एवं पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास स्थिर स्थिति तथा संचलन में किया जाए।

रचना किरण - अभ्यासक्रम

प्रस्ताव पद

1		<u>स-</u>	<u>स-</u>		<u>स-</u>	<u>स-</u>		2		<u>ग-</u>	<u>ग-</u>		<u>ग-</u>	<u>ग-</u>	
3		<u>स-</u>	<u>ग-</u>		<u>स-</u>	-		4		<u>स-</u>	<u>सस</u>		<u>स-</u>	-	
5			<u>-पू</u>		<u>स-</u>	<u>सस</u>		<u>स-</u>	-						
6		<u>स-</u>	<u>ग-</u>		<u>स-</u>	<u>-पू</u>		<u>स-</u>	<u>सस</u>		<u>स-</u>	-			

प्रस्ताव पद पूर्ण।

चरण-2

1

सपू

सग

स-

स-

| चरण का पहला भाग।

2

गससग

गग

ग

स-

| चरण का दूसरा भाग।

3

सपू

सग

स-

स-

गससग

गग

ग

स-

| प्रथम चरणार्ध।

4

सपू

सग

स-

पू

| चरण का तीसरा भाग।

5

सससस

सस

स-

-

| चरण का चौथा भाग।

6

सपू

सग

स-

पू

सससस

सस

स-

-

| अंतिम चरणार्ध।

7

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से दूसरे चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद आनक तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

|| सपू

सग

| स-

स-

| गससग

गग

| ग

स-

| सपू

सग

| स-

पू

| सससस

सस

| स-

-

||

रचना - किरण

रणन के बाद रचना का वादन करें। प्रस्ताव पद एक बार तथा प्रत्येक चरण का दो-दो बार वादन करें।

शंख

किरण

केरवा - 120

॥ ॐ ॥	<u>स-</u>	<u>ग-</u>		<u>स-</u>	<u>-पु</u>		<u>स-</u>	<u>सस</u>		<u>स-</u>	-	॥
॥	<u>स-</u>	<u>पु-</u>		<u>स-</u>	<u>पु-</u>		<u>सपु</u>	<u>सपु</u>		<u>स</u>	<u>S-</u>	
	<u>ग-</u>	<u>स-</u>		<u>ग-</u>	<u>स-</u>		<u>पु-</u>	<u>ग</u>		<u>स</u>	<u>S-</u>	॥
॥	<u>सपु</u>	<u>सग</u>		<u>स-</u>	<u>स-</u>		<u>ग S S ग</u>	<u>गग</u>		<u>ग</u>	<u>S-</u>	
	<u>सपु</u>	<u>सग</u>		<u>स-</u>	<u>पु</u>		<u>स S S स</u>	<u>सस</u>		<u>स-</u>	-	॥

रचना उदय-अभ्यासक्रम

प्रस्ताव पद	1		<u>पु S S</u> , <u>S S स</u>		2		<u>ग S ग</u> , <u>ग S ग</u>	
3		<u>पु S S</u> , <u>S S स</u>		<u>ग S ग</u> , <u>ग S ग</u>		प्रस्ताव पद का पूर्वार्ध।		
4		<u>पु S -</u> , <u>ससस</u>		<u>स S -</u> , <u>---</u>		प्रस्ताव पद का उत्तरार्ध।		

5 || पृSS , SSस | गSG , गSG | पृS- , ससस | सS- , --- ||
प्रस्ताव पद पूर्ण।

चरण-1 1 | पृSपृ , ससस | पृSपृ , ससस | चरण का पहला और तीसरा भाग।

2 | पृSS , गSS | सSS , पृS- | चरण का दूसरा भाग।

3 | पृSपृ , ससस | पृSपृ , ससस | पृSS , गSS | सSS , पृS- |
प्रथम चरणार्ध।

4 | पृSS , गSG | सSS , S-- | चरण का चौथा भाग।

5 | पृSपृ , ससस | पृSपृ , ससस | पृSS , गSG | सSS , S--: ||
अंतिम चरणार्ध।

6. पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से, पहले चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद आनक तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

|| पृSपृ , ससस | पृSपृ , ससस | पृSS , गSS | सSS , पृS- |

| पृSपृ , ससस | पृSपृ , ससस | पृSS , गSG | सSS , S--: ||

चरण-2	1	सपूस , गSग	2	सगस , पूस -	
3	सपूस , गSग	सगस , पूस -	चरण का पहला और तीसरा भाग।		
4	गSग , गगS	पूपूपु , पूस -	चरण का दूसरा भाग।		
5	सपूस , गSग	सगस , पूस -	गSग , गगS	पूपूपु , पूस -	प्रथम चरणार्ध।
6	गSग , गगS	सSS , S--	चरण का चतुर्थ भाग।		
7	सपूस , गSग	सगस , पूस -	गSग , गगS	सSS , S--	अंतिम चरणार्ध।

8 पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों को जोड़कर बजाने से दूसरे चरण का वादन पूरा होगा। उसके बाद आनक तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

॥ सपूस , गSग | सगस , पूस - | गSग , गगS | पूपूपु , पूस - |
 | सपूस , गSग | सगस , पूस - | गSग , गगS | सSS , S--:॥

रचना - उदय

रणन के बाद रचना का वादन करें। प्रस्ताव-पद का वादन केवल एक बार तथा प्रत्येक चरण का दो-दो बार वादन करें।

शंख

उदय

खेमटा - 360

॥ ॐ ॥ पृसस , ससस | गसग , गसग | पृस- , ससस | सस- , --- ॥
 ॥ पृसपृ , ससस | पृसपृ , ससस | पृसस , गसस | ससस , पृस- |
 | पृसपृ , ससस | पृसपृ , ससस | पृसस , गसग | ससस , स--ः॥
 ॥ सपृस , गसग | सगस , पृस- | गसग , गगस | पृपृपृ , पृस- |
 | सपृस , गसग | सगस , पृस- | गसग , गगस | ससस , स--ः॥

रचना श्रीराम - अभ्यासक्रम

प्रस्ताव पद 1 | पृस सगसस | 2 | पृ सग |
 3 | पृस सगसस | पृ सग | प्रस्ताव पद पूर्वार्ध।

4 | पुऽपुपु पुपु | स- - | प्रस्ताव पद उत्तरार्ध।

5 || पुस सगसस | पु सग | पुऽपुपु पुपु | स- - ||
प्रस्ताव पद पूर्ण।

चरण-1

1

| पुपु सग |

2 | पुपु सग | पुपु सग | चरण का पहला और तीसरा भाग।

3 | पुऽपुपु पुपु | स सग | चरण का दूसरा भाग।

4 | पुपु सग | पुपु सग | पुऽपुपु पुपु | स सग |
प्रथम चरणार्ध।

5 | पुऽपुपु पुपु | स- - | चरण का चौथा भाग।

6 | पुपु सग | पुपु सग | पुऽपुपु पुपु | स- - |
अंतिम चरणार्ध।

7. पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों चरणार्धों को जोड़कर बजाने से पहले चरण का अभ्यास पूरा होता है। उसके बाद आनक तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

॥ पुपु सग | पुपु सग | पुसपुपु पुपु | स सग |
 | पुपु सग | पुपु सग | पुसपुपु पुपु | स- - :॥

चरण-2

1 | सगसस पुस | 2 | पुस गस |

3 | सगसस पुस | पुस गस | चरण का पहला और तीसरा भाग।

4 | सगसस गस | पु स- | चरण का दूसरा भाग।

5 | सगसस पुस | पुस गस | सगसस गस | पु स- |
 प्रथम चरणार्ध।

6 | सगसस पुपु | स- - | चरण का चौथा भाग।

7 | सगसस पुस | पुस गस | सगसस पुपु | स- - |
 अंतिम चरणार्ध।

8. पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों चरणार्धों को जोड़कर बजाने से दूसरे चरण का अभ्यास पूरा होगा। उसके बाद आनक तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

|| सग S स पुस | पुस गस | सग S स गस | पु S - |
 | सग S स पुस | पुस गस | सग S स पुपु | स- - :||

चरण-3

1

| गस पुस |

2

| ग S S ग गग |

3

| गस पुस | ग S S ग गग |

चरण का पहला और तीसरा भाग।

4

| पुस S ग | प S - |

चरण का दूसरा भाग।

5

| गस पुस | ग S S ग गग | पुस S ग | प S - |

प्रथम चरणार्ध।

6

| पुस S ग | स S - |

चरण का चतुर्थ भाग।

7

| गस पुस | ग S S ग गग | पुस S ग | स S - |

अंतिम चरणार्ध।

8

पहले दोनों चरणार्धों का कुछ समय अलग-अलग अभ्यास करें। बाद में दोनों चरणार्धों को जोड़कर बजाने से तीसरे चरण का अभ्यास पूरा होगा। उसके बाद आनक तथा पणव के साथ सांघिक वादन का अभ्यास करें।

॥ गस पुस | गSSग गग | पुस Sग | प S- |
 | गस पुस | गSSग गग | पुस Sग | स S- :॥

रचना - श्रीराम

रणन के बाद रचना का वादन करें। प्रस्ताव पद एक बार तथा प्रत्येक चरण का दो-दो बार वादन करें।

शंख

श्रीराम

केरवा - 120

॥ ॐ ॥ पुस सगSस | प सग | पुसपुपु पुपु | स- - ॥
 ॥ पुपु सग | पुपु सग | पुसपुपु पुपु | स Sग |
 | पुपु सग | पुपु सग | पुसपुपु पुपु | स- - :॥
 ॥ सगSस पुस | पुस गस | सगSस गस | प S- |
 | सगSस पुस | पुस गस | सगSस पुपु | स- - :॥
 ॥ गस पुस | गSSग गग | पुस Sग | प S- |
 | गस पुस | गSSग गग | पुस Sग | स S- :॥

ध्वजप्रणाम - अभ्यासक्रम

भाग-1

- 1 | प s- | ग s- | स s- | प s- | स s- |
- 2 | पसपप गसगग | 3 | सससस पुसपुपु |
- 4 | पसपप गसगग | सससस पुसपुपु |
- 5 | स पुपु | स - |
- 6 | पसपप गसगग | सससस पुसपुपु | स पुपु | स - |
- 7 प पसपप गसगग | सससस पुसपुपु | स पुपु | स - |

भाग-2

- 1 -स | पुसपुपु सससग | स - |
- 2 -स | पुसपुपु सससग | स -स | पुसपुपु सससग | स - |

॥ ॐ ॥ - पृ ॥ पसपप गसगग | सससस पुसपुपु | स पुपु | स -स |
 | पुसपुपु सससग | स -स | पुसपुपु सससग | स - ॥

ध्वजप्रणाम के पहले भाग में शंख के पाँचों स्वर अवरोह क्रम में समर्पित रूप में प्रस्तुत हुए हैं। यही ध्वजप्रणाम की विशेषता है। किरण, उदय, श्रीराम, ध्वजप्रणाम के बाद केरवा तथा खेमटा ताल के प्रगत पाठों का अभ्यास करें। आगे की रचनाओं का अभ्यास करते समय रचना पुस्तक में दिये क्रम का अवलंब करें। प्रगत रचनाओं के साथ मंदगति रचनाओं का भी अभ्यास करें।

आगे की रचनाओं का अभ्यास

यहाँ उपरोक्त रचनाओं के वादन अभ्यास-क्रम की जानकारी दी गयी है। आगे की रचनाओं का अभ्यास करते समय इसी क्रम का अनुसरण कर सकते हैं।

साधारणतः एक चरण के चार भाग बनाते हुए, पहले भाग के प्रथम एवं दूसरे गण का अलग-अलग अभ्यास करने के पश्चात् इन दोनों भागों को जोड़कर बनने वाले अर्ध चरण का अभ्यास करना। इसी प्रकार शेष अर्ध चरण का अभ्यास होने के उपरान्त, पूरे चरण के वादन का अभ्यास करना। सामान्यतः चरण का पहला और दूसरा भाग समान होता है। लेकिन चौथे भाग का अंत दूसरे भाग से थोड़ा भिन्न होता है। कठिन भाग का अधिक अभ्यास करना चाहिए।

रचनाओं का अभ्यास करते समय रचना-पुस्तक सामने रखकर लिपि देखते हुए अभ्यास करना चाहिए । रचना लिपि बार-बार देखने से उसके प्रत्येक, भाग का चित्र हमारे मन पर स्पष्टतः अंकित होगा। इससे अपेक्षानुसार स्वरों का वादन, यति, अवग्रह इत्यादि सही ढंग से आ रहे हैं या नहीं इसका अवलोकन कर सकते हैं। इस प्रकार के अवलोकनयुक्त वादन से रचना की परिशुद्धता रखने में आसानी होती है । रचना-पुस्तक का उपयोग केवल अभ्यास के समय ही करना चाहिए । संचलन, समारंभ आदि कार्यक्रमों में रचना-पुस्तक का उपयोग न करें।

शंख प्रगत पाठ - सृ पृ स ग प स्वर

- 1 || सृसृसृसृसृ- | पृसपृपृपृ- | ससससस- | गससगग- | प s- |
 | पपपपप- | गसगगग- | ससससस- | पृसपृपृपृ- | सृ s- ||
- 2 || सृ पृपृ | पृ सस | स गग | ग पप | नि s- |
 | नि पप | प गग | ग सस | स पृपृ | सृ s- ||
- 3 || सृ सृपृसृपृ | पृ पृस | स सगसग | ग गप | नि s- |
 | नि निपनिप | प पग | ग गसगस | स सपृ | सृ s- ||

- 4 || सृऽसृ , पृपृपृ | सऽस- , गगग | पऽप , पऽस- |
 | पऽप , गगग | सऽस- , पृपृपृ | सृऽसृ , सृऽस- ||
- 5 || सृऽसृऽसृ , पृऽपृ | पृपृपृ , सऽस- | ससस , गऽग | गगग , पऽस- |
 | पपप , गऽग | गगग , सऽस- | ससस , पृऽपृ | पृपृपृ , सृऽस- ||
- 6 || सृऽपृ , सृऽपृ | ससस , गऽस- | सऽग , सऽग | पपप , पऽस- |
 | पऽग , पऽग | ससस , पृऽस- | सऽपृ , सऽपृ | सृऽसृऽसृ , सृऽस- ||

वादन शुद्धता

- प्राथमिक पाठों का भली भांति अभ्यास होना चाहिए ।
- मिलिट्री बैंड में अनेक मास प्राथमिक अभ्यास करने के पश्चात् ही रचना सिखायी जाती है ।
- हमारे द्वारा वादित प्रत्येक स्वर को परिपक्व बनाने के बाद ही आगे बढ़ना चाहिए ।
- विविध पाठों का संयोजन करते हुए अविरत अभ्यास किया जाए । अभ्यास आरंभ में मंदगति में हो; उसके बाद संचलन गति में तथा आखिर में उससे भी अधिक गति में किया जाना चाहिए ।
- सांतर पाठों के साथ-साथ निरंतर पाठों का अभ्यास भी करना चाहिए ।
- प्रत्येक चरण का अभ्यास पहले स्थिर तथा मितकाल में ; उसके बाद संचलन में करना चाहिए । प्रत्येक स्वर का अपेक्षानुसार वादन करने की क्षमता प्राप्त हो इसका ध्यान रखकर, अधिक अभ्यास करना चाहिए ।
- साथ ही साथ प्रत्येक चरण मुखोद्गत भी करना चाहिए ।
- रचना-पुस्तक सामने रखकर, उसमें स्पष्टता से देखते हुए अभ्यास किया जाए । लिपी बार-बार देखने से, प्रत्येक भाग का चित्र हमारे मनःपटल पर स्पष्टतया अंकित होता है । उसके अनुसार अपेक्षाकृत स्वरवादन, यति, अवग्रह आदि सही ढंग से आ रहे हैं या नहीं इसका अवलोकन कर सकते हैं । इस प्रकार के अवलोकन-युक्त वादन से रचना की शुद्धता बनाए रखने में सहायक होता है । रचना-पुस्तक का उपयोग केवल अभ्यास के समय में ही किया जाए । संचलन, समारंभ आदि कार्यक्रमों में इस पुस्तक का उपयोग नहीं करना चाहिए ।

- प्रत्येक चरण का वादनाभ्यास शुरू में अनेक बार लिपि देखकर तथा बाद में बिना लिपी देखे करना चाहिए ।
- सभी रचनाएं एक के पश्चात् एक ऐसे क्रममें: पहले प्रस्ताव-पद, बाद में पहले चरण का अभ्यास किया जाए तत्पश्चात् उनके शेष चरणों का - इसी क्रम में अभ्यास करें ।
- अभ्यस्त सभी रचनाओं का, एक के बाद एक इस क्रम में न्यूनतम आधे-पौन घंटे तक अविरत वादनाभ्यास स्थिर तथा संचलन में करना चाहिए ।
- हर दिन 15-20 मि. अभ्यास करना अच्छा रहेगा । अन्यथा सप्ताह में न्यूनतम 2-3 दिन तो अभ्यास किया जाए ।
- जिस भाग का वादन नहीं आता अथवा कठिन लगता है, उसी का अभ्यास अधिक करना चाहिए ।
- वादन करते समय पणव, त्रिभुज, झल्लरी, घड़ी अथवा अन्य ताल माध्यमों के सहयोग से अभ्यास करना चाहिए ।
- वादन के साथ समता के भागों का भी अभ्यास किया जाए ।
- सभी रचनाओं के प्रत्येक चरण का (केवल अग्रवाद) वादन करें । उदा: रचना श्रीराम - प्रस्ताव पद, चरण-1, चरण-2, चरण-3, फिर से चरण-1 ; आगे इसी क्रम में रचना सोनभद्र, दशमेश, भास्कर, नीलकंठ इत्यादि का वादन जारी रखें । वंशी में तिलंग, पहाडी, शिवरंजनी, बागेश्री, विष्णुपदी आदि का प्रयोग किया जा सकता है ।
- सभी रचनाओं के प्रत्येक चरण का दो बार (याने पुनश्चरण के साथ) वादन करते हुए, अत्यधिक समय वादन करने की क्षमता प्राप्त करना । उदा: - रचना श्रीराम - प्रस्ताव पद एक बार ; चरण - 1,2,3. दो-दो बार ; फिरसे चरण-1 दो बार

; बाद में आगे रचना सोनभद्र, दशमेश, भास्कर, नीलकंठ, इत्यादि का वादन जारी रखें । वंशी व शंख में भी उपरोक्त प्रयोग किया जा सकता है।

वादन शुद्धता - आनक

- एक कदम पर एक, दो, चार तंकार के अनुसार 8-10 मिनट संचलन गति में अविरत वादन करना ।
- उसी तरह, एक कदम पर 3 तंकार के अनुसार खेमटा ताल का 8-10 मिनट सतत् वादन करना ।
- तालानुसार केरवा तथा खेमटा ताल में रणन 10-15 मिनट से आरंभ कर आधे घंटे से भी अधिक समय तक अविरत वादन करना ।
- एक तंकार तथा एक अनुतंकार के अनुसार मंदगति में वादन प्रारंभ करते हुए, बाद में संचलन गति से भी अधिक वेग से केरवा ताल का रणन वादन करना ।
- इसी प्रकार एक तंकार तथा दो अनुतंकार के अनुसार मंदगति में वादन प्रारंभ करते हुए, बाद में संचलन गति से भी अधिक वेग से खेमटा ताल का रणन वादन करना ।
- आनक शिक्षण विधि में दिए गए कुछ केरवा तथा खेमटा ताल पाठों के अनुसार अनेकों अन्य पाठों का सृजन करते हुए, अविरत अभ्यास करना चाहिए ।
- उसी प्रकार केरवा एवं खेमटा तालों में कुछ रणन-पाठ तैयार करते हुए अभ्यास करना चाहिए ।

- केरवा तथा खेमटा इन दोनों तालों से युक्त तंकार एवं रणन पाठों का विशेष रूप से निर्माण कर, उनका अभ्यास करना ।
- उसी प्रकार केरवा एवं खेमटा तालों में रणन तथा वादन में आरोह-अवरोह का अभ्यास करना ।
- दाहिने हाथ के अनुसार ही बाएं हाथ के तंकार-अनुतंकार भी समान रीति से आने की दृष्टि से बाएं हाथ से अधिक समय अभ्यास करना । वाम-हस्त-प्रधान वादक दाहिने हाथ से अधिक अभ्यास करें ।
- दोनों हाथों से समान आघात तथा अनुतंकार प्राप्त हो इस दृष्टि से अविरत अभ्यास करना ।
- बाएं हाथ से रणन प्रारंभ करना । बाएं हाथ से ही रचना प्रारंभ कर, समाप्त भी करें
- घड़ी के टिक-टिक के अनुसार 40, 60, 100, 120, 130, 140 की गति में रचनाओं का अविरत वादन करना ।
- एक के पश्चात् एक, इस प्रकार अधिकतम रचनाओं का अविरत वादन करने की क्षमता बढ़ाना ।

वादन शुद्धता - शंख

- प्रत्येक स्वर लेकर उसका दीर्घ काल वादन । 10-15 सेकंड से आरंभ कर, 40-45 सेकंड तक अभ्यास करना ।
- स्वरों का आरोह-अवरोह । सृ, पृ, स, ग, प तथा प, ग, स, पृ, सृ; प्रत्येक स्वर न्यूनतम 20 सेकंड तक दीर्घ हो ।
- पांचों स्वरों के विविध पाठों का निर्माण कर अभ्यास करें ।
- कोई भी एक निश्चित स्वर लेकर, एक-दो मिनट तक विविध प्रकारों में सांतर वादन करना ।

- पाँचवे स्वर से छठे तथा सातवें स्वर (नि, सं) निकालने का प्रयत्न करें । तभी आरंभिक पाँचों स्वरों का वादन सुलभता से आ सकेगा ।
- केरवा तथा खेमटा तालों में विशेष पाठों का निर्माण कर, उनका अभ्यास करें ।
- सभी रचनाओं के प्रत्येक चरण का वादन (केवल अग्रवाद) करें । उदा - रचना श्रीराम - प्रस्ताव पद, चरण-1, 2, 3 फिर से चरण 1; बाद में अन्य रचना जैसे सोनभद्र, दशमेश, भास्कर, नीलकंठ इत्यादि का वादन जारी रखें ।
- सभी रचनाओं के प्रत्येक चरण का दो बार (याने पुनश्चरण के साथ) वादन करते हुए अत्यधिक समय तक वादन करने की क्षमता प्राप्त करना । उदा - रचना श्रीराम - प्रस्ताव पद एक बार, चरण-1, 2, 3 फिर से चरण 1 दो-दो बार ; बाद में अन्य रचना जैसे सोनभद्र, दशमेश, भास्कर, नीलकंठ इत्यादि का वादन जारी रखें ।
- एक के बाद दूसरी रचना का मुँह से शंख न हटाते हुए अविरत वादन करना ।
- प्रारंभ में रचनाओं का अभ्यास मंदगति में, उसके बाद संचलन गति में हो ।
- एक ही रचना का वादन अनेक बार करना ।

वादन शुद्धता - वंशी

- आनक एवं शंख के लिए सूचित अनेक अंश यहाँ पर भी लागू होते हैं ।
- प्रत्येक स्वर का प्रदीर्घ वादन करना ।
- विशेष प्रगत पाठों के साथ-साथ केरवा तथा खेमटा तालों के कुछ पाठों का निर्माण कर, उनका अभ्यास करना ।
- संचलन की ओर विशेष ध्यान दिया जाए । अभ्यास पाठों के अनुसार, रचना का एक चरण पूरा होते ही उसी का संचलन में अभ्यास करना ।
- वैयक्तिक अभ्यास के साथ-साथ ताल वाद्यों के सहयोग से सांघिक वादनाभ्यास संचलन में अधिक समय करना ।
- रचनाभ्यास का आरंभ मंदगति में करते हुए, क्रमशः संचलन गति में करना ।
- उंगलियों का चलन, फूँक लगाना आदि में आपसी तालमेल बना रहे - ऐसा अभ्यास करना ।
- प्रत्येक चरण का वादनाभ्यास लिपि देखकर अनेक बार तथा बाद में बिना लिपि देखे करना ।
- सभी रचनाओं के प्रत्येक चरण का वादन (केवल अग्रवाद) करें । उदा - रचना भूप - चरण 1, 2, 3 फिर से चरण - 1 ; बाद में अन्य रचना जैसे तिलंग, पहाड़ी, शिवरंजनी, बागेश्री, विष्णुपदी इत्यादि का वादन जारी रखें ।
- सभी रचनाओं के प्रत्येक चरण का दो बार (याने पुनश्चरण के साथ) वादन करते हुए अत्यधिक समय तक वादन करने की क्षमता प्राप्त करना । उदा : रचना भूप - चरण - 1, 2, 3 फिर से चरण -1 दो-दो बार ; बाद में अन्य रचना जैसे तिलंग, पहाड़ी, शिवरंजनी, बागेश्री, विष्णुपदी आदि का वादन जारी रखना ।

घोषदंड

घोषदंड द्वारा घोष का संचालन किया जाता है। इसके तीन प्रमुख अंग होते हैं, कलश, शेष तथा शेषपुच्छ। कलशा एवं शेषपुच्छ के मध्यभाग को शेष कहते हैं। शेष पर विविध अलंकार चढ़ा कर घोषदंड को आकर्षक रंग से सजाया जाता है। इसकी ऊँचाई सामान्यतः घोषप्रमुख के कंधे तक होती है।

घोषदंड का उपयोग प्रमुखतः घोष के संकेत देने के लिए किया जाता है। शेष समय में उसका शोभाचलन कर घोष की शोभ बढ़ाई जाती है। इसका संतुलन बिंदु (Balance Point) कलश के नीचे साधारणतः २० से.मि. की व्याप्ति में हो (range) तो सुविधाजनक होता है।

ध्यान में रखने योग्य बिंदु

- ❖ संकेतों तथा शोभाचलन की कुशलता प्राप्त करने के लिए सप्ताह में न्यूनतम २-३ दिन अभ्यास करना चाहिए।
- ❖ आरंभ में केवल दंड से अभ्यास करें। तदुपरान्त 'अभ्यास-घोषदंड' पर अच्छा नियंत्रण प्राप्त होने के बाद, 'उत्सव घोषदंड' से अभ्यास किया जाए। केवल तज्ञ व अनुभवी घोषप्रमुख ही 'उत्सव-घोषदंड' का प्रयोग करेंगे।
- ❖ प्रारंभ में संकेतों का अच्छा अभ्यास होने के बाद शोभाचलन का अभ्यास किया जाए। उदा: समाने तथा बाजू में चक्राकार घुमाना, समाने प्रणाम स्थिति में नीचे-ऊपर करना, ऊपर उछालना इत्यादि।
- ❖ यथासंभव रेतीली या मुलायम जमीन पर ही अभ्यास किया जाए, जिससे गलती से नीचे गिरने पर भी घोषदंड क्षतिग्रस्त न हो।

- ❖ अभ्यास इस प्रकार किया जाए, जिससे संकेत एवं शोभाचलन ताल के अनुरूप तथा संचलन, समारंभ आदि कार्यक्रमों के लिए पूरक बनें।
- ❖ घोषप्रमुख का किसी एक वाद्य-वादन में तज्ञ तथा तालज्ञान का जानकार होना जरूरी है।
- ❖ घोषदंड को कपड़े या रेगजीन की थैली में डाल कर सीधा रखें अथवा उल्टा लटका दें। आड़ा रखने से टेढ़ा होने की सम्भावना रहती है।

नये-वादकों का चयन-करते समय ध्यान देने योग्य विन्दु

- यथासंभव उनकी इच्छानुसार वाद्य के अभ्यास को प्राथमिकता।
- संगीत एवं तालज्ञान वाले स्वयंसेवकों का चयन करने की ओर अधिक ध्यान।
- संगीत के स्वरों के जानकर सुलभता से वंशीवादन कर सकते हैं।
- तबला, मृदंग आदि तालवाद्यों के जानकार आनकवादन सहजता से सीख सकते हैं।
- पूजा के समय सागरोत्पन्न शंख का वादन करने वालों को घोष के शंख का वादन सुलभ हो सकता है।
- दाहिने-बाएँ हाथ से शारिकाओं का चलन सहजता से कर सकने वाले स्वयंसेवकों को आनक-अभ्यास के लिए चुना जाए।
- शंखवादन का परिचय कराते हुए, शंख वादन करने के लिए बताइए। सुलभता से स्वर निकालने वाले स्वयंसेवकों को शंख अभ्यास के लिए चुनिए।

- चयन करते समय, एक आनक वादक के साथ न्यूनतम 2-3 शंख वादक, 4-5 वंशी-वादकों का चयन किया जाए। एक ही वाद्य के लिए वादकों की संख्या अधिक न हो ; तथा सब वाद्यों के लिए वादकों का सन्तुलित अनुपात बना रहे इसकी ओर अधिक ध्यान दिया जाए।
- तालज्ञान वाले व्यक्तियों को पणव, त्रिभुज, झल्लरी वाद्यों के लिए चुना जाए। तालज्ञान की परीक्षा करने की दृष्टि से शंख, वंशी तथा आनक का अलग-अलग वादन करते समय उसे हाथों से ताल बजाने को कहिए। बीच-बीच में ताल-रहित वादन करना और उस समय सही ताल पकड़ने वाले व्यक्ति का चयन करना।
- ऊँचे कद वाले व्यक्तियों को आनक तथा पणव के लिए चुन सकते हैं।
- किशोरों को प्रायः वंशी दल में सम्मिलित करें।
- अपने यहाँ उपलब्ध वाद्यों के दो-गुना व्यक्तियों का चयन करना उत्तम रहेगा।
- विद्यार्थी, व्यवसायी कर्मचारी, किसान आदि सभी वर्गों से वादकों का चयन किया जाए। स्थायी रूप से वहाँ पर रहने वाले स्वयंसेवकों का प्रत्येक वाद्य के प्रति अनुपात न्यूनतम 2-3 रहना चाहिए।

नये वादकों के अभ्यास हेतु योजना

- प्रतिदिन न्यूनतम 45 मिनट के अनुसार 20 दिन का अभ्यास।
- लगातार 20 दिन अभ्यास करना असंभव हो, तो 7 दिन अभ्यास तथा 7 दिन का स्वाध्याय ; पुनः 7 दिन का अभ्यास एवं 7 दिन का स्वाध्याय; तथा अंत में पुनः 7 दिन अभ्यास - इस प्रकार तीन चरणों में अभ्यास-क्रम पूरा करना।

- दिनों की कालावधि तय किए बिना, न्यूनतम एक रचना का अभ्यास होने तक प्रति दिन 45 मिनट अभ्यास करना । अनुकूलता के अनुसार भिन्न भिन्न दलों का समयावधि तय कर सकते हैं ।
- 5-6 दिनों के दक्षता-वर्ग का आयोजन करते हुए अभ्यास करना ।
- अलग-अलग शाखा में अलग-अलग वाद्य का वादक समूह तैयार कर, शाखा कार्यक्रमों को कोई बाधा उत्पन्न न करते हुए, उन्हें शाखा के पहले अथवा बाद में प्रतिदिन अभ्यास कराना ।
- महानगरों में भाग शः, नगर शः अथवा समीपस्थ 3-4 शाखाओं को एकत्रित कर अभ्यास केन्द्र कराना ।
- 2-3 चुनिंदा स्वयंसेवकों के लिए प्रगत वादकों द्वारा अभ्यास केन्द्र चलाना ।
- यदि किसी ग्राम में घोष-केंद्र हो, तो आस-पास के ग्रामों का चयन कर, एक ग्राम में एक वाद्य का विशेष अभ्यास रख सकते हैं । पखवाड़े या माह में एक बार सांघिक अभ्यास करा सकते हैं ।
- कार्यालय अथवा कार्यकर्ता के घर इकठ्ठा होकर, रात्रि में तथा प्रातः अभ्यास कर सकते हैं ।
- विशेषतः किशोरों को छुट्टियों के दिनों में वंशी अभ्यास कराना ।
- एक दिन की सहल (वन विहार) आयोजित कर, घोष अभ्यास कर सकते हैं ।
- शिक्षक वर्ग में शारीरिक कार्यक्रमों के साथ-साथ एक अवधि का घोष अभ्यास भी रख सकते हैं ।